इजारा लिया इन्ही नूतन इजारदारों ने प्रजा पर घोर अत्याचार आरम्भ किया। तब प्रजा को आत्म रचा करना कठिन हो गया। सुतरां वह लोग फिर जगन्नाथ को किसी प्रकार से सहायता करने में समर्थ नहीं हुए।

जगन्नाथ अति कष्ट से अपनी गृह सामग्री एक वर्ष तक बेच कर परिवार का प्रतिपालन करने लगा। किन्तु द्वितीय वर्ष में अत्यन्त कष्ट हुआ। विशेषतः उसी वर्ष में(१७६८ साल में) देश में धान बहुत कम उपजा था चावल का मूल्य अत्यन्त बढ़ गया जगन्नाथ और किसी तरह से आहार का यत्न करने में समर्थ नहीं हुआ मध्य मध्य में दो एक दिन स्त्री पुत्र सहित अनाहार से काल व्यतीत करने लगा।

कमला देवी चरखा कात कर, और घर के आम कटहल और अन्यान्य फल फूल विक्रय कर दो एक पैसा पाती, उसी से दो एक दिन सन्तानों के आहार का उद्योग करती। इस घोर विपद ने क्रमशः जगन्नाथ को एक बार ही चिप्त कर डाला। वह सर्वदा ही स्त्री से कहता "मैं दिल्ली के बादशाह के निकट जाकर अपनी ब्रह्मत्र बहाल कराऊंगा—मेरी सात

पीढ़ी की ब्रह्मत्व से कौन मुझे बेदखल करेगा ?"

जगन्नाथ के ज्येष्ट पुत्र चेत्र नाथ की अवस्था इस समय प्राय: बारह वर्ष की हुई थी। उस ने पिता के मुख से दिल्ली के बादशाह का नाम श्रवण कर एक दिन कहा "बाबा आप घर में रहिये आप के दिल्ली चले जाने पर मा को कौन काष्ठ ला देगा। कौन बाज़ार में आम बेचेगा, मैं दिल्ली के बादशाह के निकट जाऊंगा।"

पुत्र के मुख से जगन्नाथ इस बार्त्ता को श्रवण कर अश्रु पात करने लगा। सन्तानों की दुर्दशा देख कर उस का हृदय विदोर्ण होने लगा, छोटे दो पुत्रों के शीत निवारणार्थ एक वस्त्र मोल लेने को भी सामर्थ्य न थी। प्रात: काल दोनों शिशु सन्तानों को छाती से लगा कर उनका शीत निवारण करना पड़ता। कमला देवी एक जीर्ण वस्त्र द्वारा घुटने से कटि देश तक आवृत कर लज्जा निवारण करती। परन्तु वह कटि देश से मस्तक तक अनावृत ही रहती। सुतरां अब उसे घर से बाहर होना साध्य नहीं। इस प्रकार जीर्ण वस्त्र पहिन कर रमणी गण स्वामी और सन्तान के भिन्न और किसी के सन्मुख नहीं हो सक्ती।

* * * * *

दिनों दिन जगन्नाथ के दारिद्र्य की वृद्धि होने लगी। तीन दिन में एक बार भी एक मुष्टि अन्न का उद्योग नहीं कर सकता। तीन दिनों तक उसके तीनों पुत्र और स्त्री वृक्ष का पत्ता और कचूर का मूल सिद्ध कर उदर पूर्त्ति करने लगे। स्त्री पुत्र की यह दुःख यन्त्रणा जगन्नाथ को अब सह्य नहीं हुई। वह एक बार ही क्षिप्त होकर आत्म हत्या करने में उद्यत हुआ। कमला देवी उस को नाना प्रकार के प्रबोध वाक्यों से समझाने लगी किन्तु वह निश्चय किये हुए कुकार्य्य से किञ्चित् भी निवृत्त नहीं हुआ। रात्रि को गुप्त रीति से गृह के बाहर आकर एक आम्र वृक्ष के डाल में रस्सी बांध कर फांसी से प्राण त्याग किया।

स्वामी के बियोग से कमला देवी एक बारही बिना प्राण सी हो गई। अब और भी उस के दुःख की सीमा न रही।

जगन्नाथ के मृत्यु के दो दिन पश्चात्, उस के ज्येष्ट पुत्र ब्रीत नाथ ने जननी के निकट आ कर कहा "मा! बाबा कहते थे दिल्ली के बादशाह के निकट

जाने पर, अपनी ब्रह्मत्व छुड़ा सकेंगे, तो मैं अब दिल्ली के बादशाह के निकट जाता हूं, आप घर में रह कर इन लोगों का (दोनों छोटे पुत्रों का) प्रतिपालन करने की चेष्टा कीजियेगा।

पुत्र की वार्त्ता श्रवण कर कमला देवी दोनों आंखों में आसू भर कर कहने लगी। " पुत्र! तुम बारह वर्ष के बालक हो। तुम किस प्रकार से अकेले दिल्ली जाओगे। मेरे इस प्राण के रहते क्या मैं तुम को विदा कर सक्ती हूं। जो कुछ परमेश्वर ने भाग्य में लिखा है वही होगा किन्तु मैं तुम को इस समय अपने समीप से न जाने दूंगो। "

किन्तु बालक किञ्चित् भी माता के वार्त्तालाप पर सम्मत नहीं हुआ उसी रात्रि को गृह से भाग कर चला गया।

कमला देवी की अब विपद के ऊपर विपद; दुःख के ऊपर दुःख; शोक के ऊपर शोक है। दरिद्रता से प्रथम ही की भांति कष्ट पाती है दोनों सन्तान के मुख में अन्न प्रदान करना साध्य नहीं। इस दुःख पर अब स्वामी का वियोग, पुत्र का देश त्याग; मनुष्य क्या कभी इतना कष्ट, इतनी यन्त्रणा

सह्य कर सक्ता है? वह भी अनायास ही आत्म हत्या कर सम्पूर्ण यन्त्रणा, सम्पूर्ण कष्ट दूर कर सक्ती थी परन्तु संतान के स्नेह ने उस को इस पथ का अवलम्बन नहीं करने दिया।

हा! मातृ स्नेह कैसा अमूल्य धन, कैसा स्वर्गीय पदार्थ है। माता केवल दोनों सन्तान के निमित्त धैर्य्यावलम्बन करके संसार की इस यन्त्रणा का भोग करने लगी। धन्य! नारियों का धैर्य्य! धन्य इन की सहन शीलता। *

* * * * *

कमला देवी के ज्येष्ठ पुत्र के गृह त्याग के चार दिन पश्चात् अनाहार से उसके दोनों शिशु सन्तान की मृत्यु हुई। तब शोक और दुःख से वह पूर्णतः पागल हो गई। मृत दोनों संतान को गोद ले कर और एक सुतीक्ष्ण छुरी को ले कर, गङ्गा गोविन्द के प्राण संहार के निमित्त उसके गृह के सन्मुख दौड़ी।

मुर्शिदाबाद शहर के एक क्षुद्र गृह में गङ्गागोविंद उस समय कभी कभी निवास करते थे। कमला देवी उसके उसी गृह में पहुंच कर गङ्गा गोविन्द की

देखते ही उसकी ओर दौड़ी। किन्तु उसके बच में कुरी पेठाने के पूर्व ही, अन्यान्य मनुष्यों ने उसे पकड़ लिया, और पागलिनी जान कर उसे ताड़ना दिया। ताड़ित होने के समय कमला देवी ने चिप्त की भांति बकवास करके जब पति के ब्रह्मत्व के विषय और अपनी दुरवस्था की वार्ता कही, तब गङ्गागोबिंद ने स्पष्ट ही समझ लिया, कि यह जगन्नाथ भट्टाचार्य्य की स्त्री है। उस समय गङ्गा गोबिंद के हृदय में बिच्छुने डंक मारा यह सम्पूर्ण ब्यापार स्वप्नकी भांति उसे बोध होने लगा। वह स्तब्ध हो कर खड़ा रहा।

यही गङ्गागोबिंद के अपने सुधार का प्रथम सुयोग था। यदि इस मुहूर्त से ही वह फिर दूसरों का अनिष्ट न करने की प्रतिज्ञा करता, अन्तर हृदयस्थित अखंड पद प्रभुत्व का लालच परित्याग करता, तो इस जीवन भर में रात्रि में सुख से निद्रा आती। कमला देवी की छाया प्रत्येक रजनी को उसकी निद्राभंग न करती। किंतु संसार के मोहान्धकार में पड़ कर मनुष्य इन सम्पूर्ण ईश्वर के दिये सुयोग का टालमटोल करता है, और पद प्रभुत्व में केवल सुख की खोज करता रहता है।

कमलादेवी गङ्गागोविंद के गृहसे निकाली जा कर चिन्तावस्था में मुर्शिदाबाद की राजधानी के निकटवर्ती प्रकाश पथ में पागलिनी की भांति घूमने लगी। उसके एक पड़ोसी ने उसके मृत दोनों संतानों का शव उसके गोद से बल पूर्वक छीन कर दाह क्रिया किया।

कुछ काल के पश्चात देवी सिंह ने एक दिन मुर्शिदाबाद की राजधानी के निकटवर्ती किसी प्रकाश्य पथ में कमला देवी को देख कर अपने आदमियों को इसे पकड़ने के लिये कहा। कमला देवी अत्यन्त रूपवती थी। बिखरे हुए केश पागलिनी की भांति जब वह पथ में घूमती फिरती थी, तब भी उसके रूप को देख कर मनुष्य मोहित होते थे।

दुरात्मा देवी सिंह मन ही मन सोचने लगा, कि यह पागलिनी अत्यन्त रूपवती है। इसका पागलपन किञ्चित दूर होने से इसे किसी एक साहब के निकट प्रेरण करने से, बेपरिश्रम ही उसे प्रसन्न कर सकूंगा। विशेषतः साहब लोग कुछ भी इस देश की भाषा नहीं जानते। पागलिनी की कोई वार्ता और हाव भाव वह लोग नहीं जान सकेंगे।

इसको चिप्तावस्था में किसी साहब सूबा के निकट प्रेरण करने से भो उससे कोई हानि न होगी। मन ही मन ऐसा स्थिर कर नर पिशाच देवी सिंह ने परम साध्वी कमलादेवी को अपने स्त्री शाला में बांध कर रक्खा। इसके पश्चात कमला देवी लक्ष्मण सिंह की सहायता से जिस भांति देवी सिंह को स्त्री शाला से मुक्त हुई थी, वह इसके पूर्ववर्त्ती अध्याय में विवृत हुआ है। वह सम्पूर्ण वृत्तान्त यहां पुन: उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं। कमलादेवी देवी सिंह के स्त्री शाला में रहने के समय में कभी कभी उपवास से प्राण त्याग करना चाहती थी। एक एक बार दो २ तीन २ दिन तक आहार नहीं करती थी। परन्तु फिर ज्येष्ठ पुत्र के स्नेह के अनुरोध से उस संकल्प का परित्याग करती थीं। ज्येष्ठ पुत्र से भेंट होगी, इसी आशा से केवल जीवन धारण करती थी।

अष्टादश अध्याय।

अनुसन्धान।

पाठक गण को स्मरण होगा, कि कमला देवी लक्ष्मण सिंह की सहायता से देवी सिंह के स्त्री शाला से मुक्त होकर राम सिंह के गृह में आने के पश्चात, लक्ष्मण सिंह नौकरी परित्याग कर दिनाजपुर आया; और कमलादेवी की मातृ देवी के समान गृहाधिष्ठात्री भगवती की भांति स्त्री समेत सेवा सुश्रूषा करने लगा। किन्तु कमला देवी स्वामी पुत्र के शोक से सदैव ही उदास रहती। लक्ष्मण शत चेष्टा करके भी उसको सुखी न कर सका। लक्ष्मण ने अपना धन, सम्पत्ति, हृदय, मन सब ही कमला देवी के चरण में समर्पण किया। किस भांति कमला देवी को सन्तुष्ट करें इसी का उसे एक मात्र ध्यान व चिन्ता हुई। वह विश्वास घातकता के दण्ड में स्वेच्छा पूर्वक प्राण परित्याग करने में तत्पर हुआ। किन्तु उसकी मृत्यु कमला देवी को शोकार्त्त करेगी, कमला देवी के हृदय में कष्ट प्रदान करेगी, इस

पूर्व्व ही वे भी सैन्यबिभाग परित्याग कर राजस्व बिभाग के जमादार के कार्य्य में नियुक्त हुए थे। पीछे लक्ष्मण ने १७७१ साल में ही कार्य्य परित्याग किया है। राम सिंह अभी तक (अर्थात् १७८३ साल पर्य्यन्त) कलेक्टरी के जमादार के पद पर नियुक्त हैं।

लक्ष्मण को कमला देवी के सम्पूर्ण दुःख का कारण ज्ञात होने पर शीघ्र ही उसने ज्येष्ट पुत्र दीन नाथ की खोज के लिये यात्रा किया। प्रेमानन्द भी लक्ष्मण के सङ्ग ही सङ्ग चला ये दोनों मनुष्य नाना देश पर्य्यटन करने लगे। पटना, गया, काशी, अयोध्या, श्री वृन्दावन और उस के पश्चात् दिल्ली तक ये दोनों कमला देवी के पुत्र के अनुसन्धान में चले गये इसी क्रम से पूरे ग्यारह वर्ष पर्य्यन्त उन्हीं ने अनुसन्धान किया किन्तु कहीं भी उस का पूर्ण समाचार नहीं मिला अंत में लक्ष्मण ने प्रेमानन्द से कहा—

"भाई तुम स्वदेश को लौट जाओ। मैं अब देश को न जाऊंगा कमला देवी को मैं अपनी जननी समझता हूं। जिस स्नेह मयी जननी के गर्भ

से जन्म ग्रहण किया है, उन के जीवित रहने से उन की जैसी भक्ति श्रद्धा करता, वैसे ही कमला देवी की भी भक्ति श्रद्धा करता रहता हूं। मेरे बाल्य काल ही में मेरी गर्भधारिणी माता की मृत्यु हुई है। उन को किसी प्रकार से सुखी करना मेरे भाग्य में नहीं था अब मातृ सदृशी कमला देवी को सुखी न कर सकने से मेरा जीवन वृथा है। अतएव मैं अब उन को मुख न देखाऊंगा काशी में जाकर महादेव के मन्दिर के द्वार धरना देऊंगा। चैतनाथ कहां है, इस बात का स्वप्न न होगा तो शिव के द्वार में इस प्राण का विसर्ज्जन करूंगा।"

इसी प्रकार स्थिर कर लक्ष्मण ने प्रेमानन्द को सङ्ग लेकर फिर काशी में आगमन किया। यहां लक्ष्मण के पिता फतह सिंह से उन की भेंट हुई फतह सिंह ने लक्ष्मण की सम्पूर्ण वार्त्ता श्रवण करके कहा—

"पुत्र! यहां एक परमहंस हैं। वह भूत भविष्यत सम्पूर्ण गणना करके कह सक्ते हैं। तुम्हें धरणा देने का प्रयोजन नहीं। मैं तुम को उसी परमहंस के निकट ले चलता हूं। कमला देवी का पुत्र जीवित है या

नहीं, और जीवित है तो कहां है, उसे परमहंस निश्चय बतला सकेंगे।"

लक्ष्मण ने तब अपने पिता के सङ्ग ही कर परमहंस के निकट जाकर अपना वृतान्त प्रगट किया। परमहंस ने लक्ष्मण की सम्पूर्ण वार्त्ता सुन कर किञ्चित् हास्य करके कहा—

"पुत्र ! जिस ब्राह्मण कुमार की वार्त्ता पूछते हो उस के विषय में कुछ गणना करके कहना नहीं पड़ेगा। वह बालक अनेक दिन मेरे आश्रम में रहा था। उस का संपूर्ण वृत्तान्त मुझे ज्ञात है वह अब पञ्जाब में है।"

परमहंस की वार्त्ता पर लक्ष्मण को विश्वास नहीं हुआ। वह चेतनाथ के विषय में उस से बारंबार अनेक प्रश्न करने लगा।

परमहंस ने तब किञ्चित हास्य करके कहा "पुत्र ! अब देश का राजा म्लेच्छ है मनुष्य की वार्त्ता पर मनुष्य विश्वास नहीं कर सक्ता। राजाके पापी होने ही से मनुष्यों के मन में ऐसी अवस्था उत्पन्न होती है। उस बालक के विषय में मैं जो कुछ जानता हूं उसे वर्णन करता हूं सम्पूर्ण वार्त्ताएं श्रवण करने से

तुम्हें न विश्वास करने का कोई कारण न रहेगा।

"मैं बीस वर्षों से इसी काशी धाम में बास करता हूं। बोध होता है आज प्रायः दस बारह वर्ष हुए (अर्थात् जिस वर्ष वंग देश में बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा था उसके एक वर्ष पूर्व्व) बारह तेरह वर्ष के वय का एक बालक मणिकर्णिका के घाट पर अनाहार से मृत प्राय हो पड़ा था। मैंने गंगा में प्रातः स्नान करके उठते ही, उस बालक को देखा था। उसका प्राण वायु तब तक निःशेष नहीं हुआ था। बालक सर्व्व सुलक्षणों से संयुक्त था। उसको देखने से बोध होता है, कि भगवान बैकुण्ठपति ने किसी साध्वी की मनोबांच्छा पूर्ण करने के निमित्त स्वयं मर्त्यलोक में आकर उसके गर्भ में पुत्र रूप से जन्म लिया है। पुत्र! तुम से और अधिक क्या कहूं, ऐसा सुन्दर बालक मैंने और कहीं नहीं देखा। बालक को इस भांति मरण तुल्य अवस्था में देख मैंने उसे गोद में लेकर अपने आश्रम में लाया था। मेरे शिष्यों ने उसे औषध पथ्य प्रयोग करके पांच सात दिनों में किञ्चित स्वस्थ किया।

"बालक चेतन्य लाभ करके केवल यही कहने

लगा—"मुझे छोड़ दीजिये, मैं दिल्ली के बादशाह के निकट जाऊंगा—अपनी ब्रह्मत्र भूमि को छुड़ाऊंगा—मेरी मां और दो भाई अनाहार से मरते हैं।"

"हम उस समय बालक की इस वार्त्ता का किञ्चित भी अर्थ नहीं समझ सके थे। किन्तु नाना प्रकार से उसे समझा कर समाधान करने लगे। प्रायः पन्द्रह दिन पश्चात उसे पूर्णतः आरोग्य प्राप्ति हुई। तब उसने हमसे कहा, कि कम्पनी के आदमियों ने अनेकानेक ब्राह्मणों की ब्रह्मत्र भूमि को ज़ब्त किया है। उससे कई सौ ब्राह्मण परिवार समेत अन्न के अभाव से पूर्णतः मारे पड़े हैं हमारे पिता को ब्रह्मत्र ज़मीन ज़ब्त होने पर वह निरन्न हो गये। तत्पश्चात स्त्री पुत्रों का दुःख सहन करने में असमर्थ हो उन्हीं ने फांसी से प्राण त्याग किया है। और मेरी माता और दो छोटे भाई अन्नाभाव से मृत प्राय हुए घर में हैं। इस लिये अब मैं ब्रह्मत्र ज़मीन को छुड़ाने के निमित्त दिल्ली के बादशाह के निकट जाता हूं।

"पुत्र! बालक के मुख से इस वार्त्ता को श्रवण कर मेरा हृदय अत्यन्त व्यथित हुआ। किन्तु

इसका साहस और सहृदयता देखने से बड़ा आश्चर्य हुआ था। मैंने किञ्चित हास्य कर के कहा "पुत्र! तुम अत्यन्त बालक हो। तुम तो कभी दिल्ली के सम्राट से साक्षात न कर सकोगे। विशेषतः अब सम्राट को कोई सामर्थ्य नहीं। बंग देश को सम्राट ने कम्पनी को दिया है। और सम्राट का अधिकार रहने से भी क्या वह तुम्हारी नालिश सुनते? क्या तुमको किसी प्रकार प्रदान करते? तुमने देश त्याग कर बड़ा निर्बोध का कार्य्य किया है। किन्तु तुम्हारी दुःख की वार्त्ता श्रवण कर मैं अत्यन्त दुःखित हुआ। यहां हमारे परिचित अनेक धनी मनुष्य हैं। मैं उनके निकट से कुछ रुपया संग्रह कर तुम को देऊंगा। तुम इन्हीं रुपयों को लेकर घर लौट जाओ। किन्तु सावधानता से चले जाना तुम्हारे भांति बालक को रुपया संग लेकर चलने से राह में अनेक विपद होने की सम्भावना हो सक्ती है।"

"बालक ने मेरी वार्त्ता श्रवण कर कुछ काल तक मुझ से तर्क वितर्क कर कहा "दिल्ली के बादशाह हमारे सात पुरुषों की ब्रह्मत्व भूमि को क्यों न छोड़ देंगे?"

परन्तु बालक तीक्ष्ण बुद्धि है। जब मैंने उसे समझा कर सम्पूर्ण वार्ताएं कहीं तब वह मेरे उपदेशानुसार कार्य्य करने को सम्मत हुआ। मैंने इसी स्थान के दश पांच भद्र मनुष्यों से दस मोहर और पचास रुपया संग्रह कर उसको दिया। मेरे शिष्यों ने उतना रुपया और मोहर को उसके कटि देश में बांध दिया। वह स्वदेश को चला गया।

किन्तु कई एक मास पश्चात वह फिर बङ्ग-देश से यहां आ पहुंचा, और मेरे दिये हुए रुपये मोहर को मेरे हाथ में लौटा कर उस ने कहा— "ठाकुर मुझे रुपयों का अब कोई प्रयोजन नहीं। मैं अग्नि कुण्ड में कूद कर आत्म हत्या करूंगा।"

मैं उसे फिर इतना शीघ्र यहां आते देख कर, और उसकी वार्ता श्रवण कर आश्चर्य युक्त हुआ उसकी शारीरिक अवस्था भी अत्यन्त शोचनीय बोध होने लगी। उसके शरीर में कोई रोग नहीं देखा गया। किंतु उसका वही उज्ज्वल वर्ण पूर्णत: विवर्ण और शरीर अस्थि चर्म्म सार हो गया था।

मैं बारम्बार उसके वर्त्तमान दुःख का कारण पूछने लगा। किंतु उसने अपने मनका भाव कुछ

भी प्रगट नहीं किया। मैंने उससे उसके दोनों छोटे भाइयों के समाचार का प्रश्न किया। उसने दीर्घ निःश्वास परित्याग कर के कहा उन दोनों की मृत्यु हो गई। पश्चात उसकी जननी के समाचार का प्रश्न किया। किंतु उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तब मुझे संदेह हुआ, कि अपनी जननी के संम्बंध में इसका कोई कुसंस्कार हुआ होगा, इस लिये ऐसी अवस्था हुई है।

"इस बालक के ऊपर मेरा अत्यंत अनुराग उत्पन्न हुआ था। इसी से उसका सम्पूर्ण समाचार सुंनने के निमित्त अतिशय कौतूहल हुआ। मैं बारम्बार उससे कहने लगा कि—अपने सम्पूर्ण दुःख का समाचार मुझ से कहो मैं साध्यानुसार तुम्हारे दुख दूर करने की चेष्टा करूंगा।

बालक ने कहा कि मेरे दुख दूर करने का सामर्थ किसी को भी नहीं है। एक मात्र मृत्यु ही केवल वह दुख दूर कर सकेगी।

मैंने फिर उससे कहा कि तुम्हें कुछ भय नहीं मैं तुम्हारे किसी गुप्त समाचार का प्रकाश नहीं करूंगा। अपने वर्तमान दुख का समाचार मुझ से कहो।

अंत में बालक ने रोते रोते कहा "ठाकुर मातृ-कलङ्क क्या कोई मुख पर ला सक्ता है" यही कहते मात्र उच्छ्वसित शोक के वेग से उसका कंठरुद्ध हो गया। वह मूर्छित हो पड़ा।

" किञ्चित कालोपरान्त चैतन्य होकर वह फिर क्रन्दन करने लगा। मैंने तब फिर उससे कुछ प्रश्न नहीं किया। किन्तु दूसरे दिन प्रातः काल और एकान्त में उसे बुलाकर कहा पुत्र! तुम धैर्य्यावलम्बन पूर्वक सम्पूर्ण समाचार मुझ से कहो। तुम्हे इस सम्बन्ध में कोई भ्रम होने से मैं उस भ्रम का संशोधन कर सकूंगा। बालक ने रोते रोते कहा, कि स्वदेश में जाकर अपने पैतृक घर में गया, परन्तु वह घर शून्य पड़ा हुआ है। एक पड़ोसी के मुख से सुना कि मेरे घर से निकलने के दो तीन ही दिन पीछे मेरे दोनों छोटे भाइयों की मृत्यु हुई। पीछे उसकी जननी ने देवी सिंह के स्त्री शाला में प्रवेश कर वेश्या वृत्ति अवलम्बन किया है।

"वेश्यावृत्ति अवलम्बन किया है" इस बात के कहने के समय बालक का तीन बार कन्ठावरोध

हुआ। वह निरंतर क्रन्दन करने लगा। उसके इन सम्पूर्ण समाचारों को सुन कर मैं मन ही मन अतिशय कष्ट अनुभव करने लगा। पश्चात अनेक भविष्यत चिन्ता करके उससे कहा "पुत्र! तुम्हारी जननी के चरित्र सम्बन्ध में तुम्हें वृथा कुसंस्कार उत्पन्न हुआ है। मुझे बोध नहीं होता, कि जिसने तुम्हारे समान सुसन्तान गर्भ में धारण किया है वह कभी इस प्रकार के कुकार्य्य करने में प्रवृत्त हो सक्ती है?

"परन्तु बालक ने मेरी वार्त्ता पर विश्वास नहीं किया। उसने आत्म हत्या करने के लिये संकल्प कर लिया। उसे आत्म हत्या से निवृत्त करने के निमित्त मैंने फिर उससे कहा पुत्र! मैं फल देख कर वृक्ष की प्रकृति निर्णय कर सक्ता हूं। मनुष्य दो प्रकार से साधु जीवन लाभ कर सक्ते हैं। कोई कोई माता पिता ही से सत प्रकृति को प्राप्त होकर सच्चरित्र होते हैं, और कोई २ सत् शिक्षा द्वारा सच्चरित्र लाभ करते हैं। केवल सत शिक्षा से जो कोई सच्चरित्र लाभ करता है उसको अपनी प्रकृति के साथ सर्वदा संग्राम करना होता है। उसको

इच्छा, बासना सर्वदा ही असत पथ में दोड़ा करती है। परन्तु ज्ञान के द्वारा वह उन सब प्रवल बासनाओं को परास्त करता है। और जो कोई पिता माता से सत प्रकृति लाभ करता है। वह बाल्यावस्था से अपनी प्रकृति के अनुसार सतपथ में चला जाता है। तुम तेरह वर्ष के बालक हो। तुम में मैं जो साधु भाव देखता हूं, वह कुछ शास्त्र शिक्षा का फल नहीं है। तुम अब तक ऐसी कुछ शिक्षा लाभ नहीं किये हो कि कुपथ गामिनी इच्छा की ओर प्रबल बासना को परास्त करने में समर्थ होगे। अवश्य ही अपने हृदय का यह सकल साधु भाव तुम ने जिस जननी की प्रकृति ही से लाभ किया है इस में कोई सन्देह नहीं, पाप पर मिथ्या प्रवञ्चना में तुम्हारी जननी की विशेष घृणा न रहने से ऐसी अल्प अवस्था में तुम इस भांति का पवित्र जीवन लाभ न कर सक्ते। तुम्हारी जननी निश्चय ही परम साध्वी हैं वह कभी कुपथ गामिनी नहीं हैं। तुम बड़े ही भ्रम जाल में पड़ गये हो।

मेरी इस वार्त्ता को श्रवण कर बालक की किञ्चित् समाधान हुआ। परन्तु फिर मुझ से पूछने लगा

"महाशय! मेरी जननी यदि सत्य ही कुपथगामिनी नहीं हुई है, तो हमारी पड़ोसी ऐसी मिथ्या वार्त्ता क्यों कहेगी? उस से मेरी जननी की तो कोई शत्रुता नहीं थी।

"मैं ने कहा पुत्र! इस संसार का कुछ भी भाव तुम नहीं जानते—जिस व्यक्ति के मन में जैसा भाव होता है, वह अन्यों के चरित्र में भी वही भाव देखता है। देवी सिंह ने तुम्हारी जननी को पकड़ लिया है, यही सुन कर उस ने निश्चय ही मान लिया है, कि तुम्हारी जननी ने अवश्य ही धर्म्म परित्याग कर दिया है। उस के ऐसे सिद्धान्त करने का और क्या कारण हो सक्ता है? उस ने तो तुम्हारी जननी को धर्म्म त्याग करते नहीं देखा है। वह ऐसी अवस्था में पड़ने से जैसा करती, तुम्हारी जननी ने भी वैसा ही किया है ऐसा सोच कर तुम से उस ने इस सम्पूर्ण निर्मूल समाचार को कहा है।

"मेरी इस शेष वार्त्ता को श्रवण कर बालक के मन का सन्देह निःशेष हुआ। कई एक दिनों के पश्चात् उस ने आत्म हत्या करने की अभिलाषा को

परित्याग किया, और कहां जाये, किस भांति जीवन व्यतीत करें इस सम्बन्ध में मेरे विचार का प्रश्न किया। मैं ने उसे स्वदेश को लौट जाने के लिये कहा। परन्तु उसमें उस की सम्मति नहीं हुई। उस ने कहा स्वदेश में जाने से मनुष्यों के कहने पर मुझे फिर आत्म हत्या करने की इच्छा होगी। मैं भी तब समझ गया कि इस का स्वदेश जाना योग्य नहीं है। उस को यहां रख कर शास्त्रादि अभ्यास करने को कहा। अल्प ही काल में उसने नाना शास्त्र में विशेष पारदर्शिता लाभ किया। प्रायः पांच सात वर्ष हुए कि वह पञ्जाब में चला गया है। सुना है कि वहां उस ने एक प्रधान सैन्याध्यक्ष का पद लाभ किया है अब पंजाब में वह "दयाल बाबू" के नाम से परिचित है।"

परमहंस से इस समाचार को सुन कर लक्ष्मण सिंह ने अतिशय आनन्द लाभ किया। और प्रेमानन्द को स्वदेश की ओर लौटा कर, उस ने अकेले ही केवनाथ के अनुसन्धान के लिये पञ्जाब की ओर यात्रा की।

—*—

ऊनविंश अध्याय।

दयाल बाबू।

लक्ष्मण सिंह काशी परित्याग कर पञ्जाब की ओर चला। इस समय देश में पथ व घाट में बड़ा सुबीता न था। पथिक गण को एक देश से दूसरे देश में जाने के लिये अनेक जंगल और पहाड़ का पर्य्यटन करना पड़ता था। किन्तु कमला देवी को सुखी करने के निमित्त लक्ष्मण किसी प्रकार के कष्ट को कष्ट ही नहीं समझते थे, किसी प्रकार के दुःख को दुःख ही नहीं बोध करते थे।

वर्त्तमान ऊनविंश शताब्दी के नयी सम्प्रदाय लक्ष्मण के ऐसे आचरण को प्रशंसनीय नहीं समझ सकते। वह लोग कदाचित लक्ष्मण का अशिक्षित लड़कपन कह कर वर्णन करेंगे। किन्तु बिचार शील मनुष्य मात्र लक्ष्मण के इस निःस्वार्थ प्रेम में देवत्वका भाव देख सकेंगे।

इस ऊनविंश शताब्दी के स्वार्थपरता के विद्यालय में अध्ययन न करने से, कापुरुषता मंत्र से

दीक्षित न होने से, यदि शिक्षा की त्रुटि होती है तो लक्ष्मण सिंह अवश्य ही अशिक्षित था। किन्तु चित्तोत्कर्ष साधन, हृदयोन्नति यदि शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य है, तो हम लक्ष्मण को पूर्णत: अशिक्षित कहने का साहस नहीं कर सकते। उनविंश शताब्दी की सतशिक्षा बंगीय युवकों के हृदय को शुष्क कर उनके हृदय की शोभा अनुभाविकता को दूर कर, उस के परिवर्तन में अभिमान और आत्म सुख की चिन्ता द्वारा उन की अंतरात्मा को परिपूर्ण करती है। ऐसी शिक्षा के अभावही से लक्ष्मण के आचरण और व्यवहार नये सम्प्रदाय के आचरण और व्यवहार से भिन्न थे। कोई कोई कह बैठें कि लक्ष्मण ने कमला देवी के निमित्त इतना कष्ट, इतनी यंत्रणा क्यों सहा? इसमें उसका क्या लाभ था? इस प्रश्न के उत्तर में हम यही कह सकते हैं, महात्मा ईशू खृष्ट के निमित्त स्टीफन और पौल प्रभृति शिष्यगण प्राण त्याग करने में भी कुंठित क्यों नहीं हुए? हनुमान ने प्राण सौंप करके भी श्री रामचंद्र का कार्य्योधार क्यों किया? चैतन्य देव के निमित्त रूप और सनातन ने संसार का पद प्रभुत्व

परित्याग क्यों किया ? खृष्ट, श्री रामचंद्र और चैतन्य में उन के भक्त गण जिस सौंदर्य्य का भाव दर्शन करके विमोहित हुए थे, लक्ष्मण ने भी कमला देवी में वही भाव देख कर उसके चरणों में जीवन समर्पण किया। हम ने पूर्व ही कहा है कि उनविंश शताब्दी की शिक्षा द्वारा लक्ष्मण की शोभा का अनुभव विनष्ट नहीं होता है। सुतरां कमला देवी के हृदय स्थित पवित्र भावके दर्शन से वह सहजही मोहित हुए थे।

लक्ष्मण पथ में विविध कष्ट यंत्रणा भोग करके प्रायः दो मास के पश्चात पंजाब में आ पहुंचा।

कमला देवी का ज्येष्ठ पुत्र क्षेत्र नाथ सात वर्षों से पञ्जाब में निवास करता है। उसने बारह तेरह वर्ष के वय से बङ्गदेश परित्याग किया था। अब उसकी वय प्रायः तेईस चौबीस वर्ष की हुई है। उस के प्रकृत नाम क्षेत्रनाथ भट्टाचार्य्य का पञ्जाब के थोड़ेही मनुष्य जानते हैं। यहां वह "दयाल बाबू" के नाम से सर्वत्र परिचित है। वह पञ्जाब में एक प्रधान सेनाध्यक्ष का पद लाभ करके भली भांत अर्थ सञ्चय करते हैं। किन्तु अपने सुख

स्वाच्छन्द के निमित्त अधिक अर्थ व्यय नंहीं करते। उनका उपार्जित धन दीन दुःखी के उपकारार्थ व्यय होता है। किसी मनुष्य के अन्नाभाव से दुःख पाने का समाचार सुन कर वह तुरत उस के घर जा कर उसे अर्थ प्रदान करते, और उसका तत्व समाचार लेते, और सामर्थ के अनुसार उसके दुःख बिमोचन की चेष्टा करते। अपने उपार्जित धन का १६ भाग करके उसमें से पन्दरह भाग दीन दुःखी के कष्ट बिमोचनार्थ दान करते थे। शेष एक अंशका अर्द्धांश स्वयं व्यय करते और अर्द्धांश जननी के निमित्त रख देते। परमहंस की वार्ता स्मरण कर वह मनही मन सोचते कि उनकी जननी के जीवित रहने से कदाचित भविष्यत में कभी जननी से भेंट हो सकती है और यदि साक्षात हुआ तो उनके भरण पोषण के निमित्त इस सञ्चित धन को उन्हे दे दूंगा। परन्तु प्रत्येक मास जननी के निमित्त रुपया रखने के समय चक्षुओं के जल से उनका वक्षस्थल भींज जाता। वह एकान्त में बैठ कर सोचते "हाय मेरे कनिष्ट दोनों भाइयों की अन्नाभाव से मृत्यु हो गई है अतएव जितने दिन मेरे हाथ में

रुपया रहेगा शक्ति के अनुसार किसी का अन्न कष्ट निवारण करने में कभी त्रुटि नहीं करूंगा।

जब लक्ष्मण सिंह चेत नाथ के भवन में पहुंचा, तब वह अनेकानेक दुःखी कङ्गालिनों को गृह के आंगन में बैठाकर वस्त्र दान कर रहे थे। इन्हीं सम्पूर्ण दीन दुःखियों में एक स्त्री एक फटे वस्त्र द्वारा घुटने से कटिदेश पर्य्यन्त ढांक कर उसके सन्मुख आ खड़ी हुई। इस स्त्री का कटि देश से मस्तक पर्य्यन्त बे वस्त्र था। इसे देखते ही चेतनाथ के चक्षु से बिन्दु बिन्दु अश्रुपात होने लगा। वह तुरतही इस स्त्री के हाथ में चार पांच वस्त्र और कई एक रुपया देकर गृह में प्रवेश करके हा हा कार कर क्रन्दन करने लगे। बारह तेरह वर्ष पूर्व चेत नाथ ने जब दिल्ली के बादशाह के निकट जाने के निमित्त गृह परित्याग किया था, तब उनकी जननी इसी प्रकार एक फटे वस्त्र द्वारा लज्जा निवारण करती थी। आज इस भिक्षार्थिनी दरिद्रा रमणीको वैसाही छिन्न वस्त्र पहिने देख कर उनकी जननी के उस समय का दुख कष्ट स्मरण हुआ। वह और क्रन्दन को रोक न सके। अपने भृत्य को उपस्थित

अन्यान्य भिक्षुकों को वस्त्र वितरण की आज्ञा दे कर तुरत गृह में चले गये ।

वस्त्र वितरण के पश्चात भृत्य ने तुरन्त ही गृह में प्रवेश करके कहा—"हुजूर आप के घर से आप की मा ठाकुरानी का पत्र लेकर एक मनुष्य आया है। वह द्वार पर खड़ा है"।

चन्द्र नाथ शोक से विह्वल हो कर क्रन्दन करते थे। वह भृत्य की कोई भी वार्त्ता नहीं सुन सके। भृत्य आश्चर्यित हो कर मौनावलम्बन किये रहा। कुछ काल के पीछे उसने फिर कहा—"हुजूर आपके घर से आप की मा ठाकुरानी का पत्र ले कर एक मनुष्य आया है।"

भृत्य की वार्त्ता श्रवण कर वह मनही मन सोचने लगे, यह क्या स्वप्न है? मेरी जननी के निकट से पत्र ले कर मनुष्य आया है!!! माता के दुःख कष्ट की स्मृति ने मुझे क्या क्षिप्त कर डाला है? मा जीवित यदि हो भी तो किस भांति वह यहां मनुष्य को भेजेंगी ऐसा उनका कौन बान्धव है, जो मेरे अनुसन्धान के निमित्त पंजाब में आवेगा। और मैं यहां हूं यह उन्होंने कैसे जाना।

इस मातृशोक ने जानता हूं कि मुझे चिप्त कर दिया है। बोध होता है मैंने स्वप्न देखा है।

भृत्य ने फिर कहा "हुजूर आप के देश से मनुष्य आया है।

तब उन्हों ने अत्यंत कष्ट से चित्त स्थिर कर के चक्षुओं को पोछते पोछते बाहर आकर भृत्य से कहा "कौन आया है उसे यहां आने के लिये कहो।"

भृत्य तब लक्ष्मण सिंह को बुला लाया। लक्ष्मण ने भृत्य के पीछे पीछे गृह में प्रवेश करने के समय देखा, कि असंख्य दीन दुःखी "दयाल बाबू की जय हो" यही कह कर आशीर्बाद देते हुए नवीन बस्त्र हाथ में लेकर बाहर चले आते हैं। उसने चैत नाथ के निकट आकर आसन ग्रहण करके कहा "महाशय मैं बंग देश से आया हूं। आप का नाम क्या चैत नाथ भट्टाचार्य्य है?"

चैतनाथ ने कहा "हां मेरा नाम चैतनाथ भट्टाचार्य्य है।"

लक्ष्मण। मुर्शिदाबाद के जगन्नाथ भट्टाचार्य्य महाशय आप के पिता हैं।

चैतनाथ। हां।

लक्ष्मण। आपकी ब्रह्मत्र भूमि ज़ब्त होने पर आपने बारह तेरह वर्षों से स्वदेश परित्याग किया है ?

चैतनाथ। आप इन सम्पूर्ण विषयों को क्यों पूछते हैं ?

लक्ष्मण। मैं ग्यारह वर्षों से देश देश आपका अनुसन्धान करता हूं। कई एक मास हुए काशी में एक परमहंस से आपका समाचार पाकर यहां आया हूं मुझे शत्रु न समझिये। अपना सहोदर समझिये। आप की जननी कमला देवी को मैं अपनी गर्भ धारणी की भांति जानता हूं।

जननी का नाम श्रवण करते ही चैतनाथ के दोनों चक्षु से अश्रु पात होने लगे। कुछ काल तक निर्वाक हो रहे पश्चात् अपना चित्त स्थिर करके प्रश्न किया। "मेरी जननी अब कहां और किस अवस्था में हैं, उन्हें क्या आप जानते हैं ?"

इसी प्रश्न के उत्तर में लक्ष्मण सिंह ने आद्यो-पान्त कमला देवी का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह दिया। जैसे कमला देवी क्षिप्त होकर देवी सिंह के आद-मियों से पकड़ी गई थी, पीछे जैसे उन्हों ने देवी सिंह की स्त्री रोधन शाला से मुक्त हो कर राम

सिंह के गृह में आश्रय लिया, तत्पश्चात् उन्हें सुखी करने के निमित्त उन के पुत्र की खोज और परमहंस से भेंट इत्यादि सम्पूर्ण घटना की उसने लोकनाथ से कहा ।

उस की वार्त्ता श्रवण करने के समय लोकनाथ के दोनों चक्षुओं से निरंतर अश्रुपात होने लगा। किन्तु लक्ष्मण की सम्पूर्ण वार्त्ता समाप्त होने पर लोकनाथ ने अपने वक्षस्थल को हाथ से पीट कर कहा "हा परमेश्वर मेरे समान पापात्मा जगत् में और कोई नहीं है। परम साध्वी मातृ देवी के चरित्र सम्बन्ध में इस पाप का सन्देह मन में उदय हुआ था। शास्त्र कहता है कि विवेक ईश्वर की बाणी है। तो विवेक ने मुझे क्यों भ्रम में डाल दिया? कदाचित मुझ में विवेक नहीं है। अथवा हाय, मेरा विवेक दूषित हुआ है। अभी इन पापी प्राणों का परित्याग कर इस पाप का प्रायश्चित्त करूंगा।"

यह कह कर वह तुरंत मूर्छित हो गये। लक्ष्मण उन का मस्तक अपनी गोद में रख कर पंखा झलने लगा, और भृत्य को मस्तक में जल सिञ्चन करने को कहा।

कुछ काल पीछे वह चैतन्य हो कर उच्चैः स्वर से क्रन्दन करने लगे । बारम्बार अपना अनादर करके अत्यन्त आक्षेप से कहने लगे "हाय मैं कैसा पापात्मा हूं! कैसा नराधम हूं!—बारह बर्षों से मेरी जननी इतना कष्ट भोग करती हैं। अब यह पाप मुख जननी को नहीं दिखाऊंगा।

लक्ष्मण उनको अनेक प्रबोध वाक्यों से समझाने लगा। किन्तु किञ्चित भी उनका क्रन्दन निवृत्त नहीं हुआ। उन्हों ने रोते रोते लक्ष्मण के चरण पर मस्तक रख कर कहा "भाई तुम्हे धन्य है! तुम देवता हो! तुमही मेरी पुण्यवती जननी के उपयोगी पुत्र हो। और वह तुम्हारी ही यथार्थ माता हैं। मेरे समान पापात्मा के उन पुण्यवती को मा कहने से, वह कलंकित होंगी। भाई मैं प्राण का बिसर्ज्जन कर के इस पाप का प्रायश्चित करूंगा। तुम स्वदेश में जाकर जननी से कहना कि इस पापात्मा अकृतज्ञ सन्तान को वह जिस भांति हो सके भूल जायें। इस पापात्मा के लिये वह एक बिन्दु अश्रु न गिरावें। मैं अत्यंत नराधम हूं मेरा हृदय अत्यन्त कुटिल है। ऐसा न होता तो

पड़ोसियों की वार्त्ता श्रवण कर ऐसा सन्देह मेरे मन में क्यों उपस्थित होता ? धन्य परमहंस ! सत्यही तुम भूत भविष्यत कहने में समर्थ हो।

लक्ष्मण ने कहा "भाई तुम क्यों पागलों की भांति वार्त्ता करते हो। तुम्हारे शोक से जननी सर्वदा ही अश्रु विसर्जन करती हैं। सो चेष्टा करके भो मैं उन्हें सुखो नहीं कर सका। देवी सिंह के स्त्री रोधन शाला में रहने के समय उन्हों ने प्राण त्याग करने के लिये तीन चार वार संकल्प किया था। किन्तु तुम्हारा ही मुख देखने की आशा से उन्हों ने आत्म हत्या नहीं किया तुमने आत्म हत्या किया कि उन्हों ने भी आत्म हत्या किया। इससे मातृ हत्या का पाप अवश्य ही लग जायेगा।

लक्ष्मण की वार्त्ता श्रवण कर चेत्र नाथ ने कहा "मैं अतिशय अकृतज्ञ सन्तान हूं मैं कैसे जननी को मुख दिखाऊंगा। मैं इतने समय तक उनको परित्याग किये रहा हूं।"

लक्ष्मण। भाई सन्तान के अकृतज्ञ होने से जननी कभी उसको परित्याग नहीं कर सकी। सन्तान चाहे अच्छा हो या बुरा हो मा का स्नेह किञ्चित

भी कम नहीं होता है। मातृ स्नेह क्या पदार्थ है इसे वाक्य द्वारा कोई भी नहीं कह सकता, यह कवि की कल्पना को भी परास्त कर सकता है।

लक्ष्मण के ऐसे समझाने पर, क्रमशः चेत नाथ के मन की ग्लानि कम होने लगी। लक्ष्मण की सम्पूर्ण वार्त्ता श्रवण कर वह उसको देवता समझने लगे। और दो तीन दिन के पश्चात् ही स्वदेश में जाना स्थिर किया।

दो तीन दिनो ही में दयाल बाबू के पञ्जाब त्यागने के समाचार का प्रचार हुआ। असंख्य मनुष्य उन से भेंट करने के लिये आने लगे। सब ही उनके लिये दुःखित हुए। दीन दुःखी मनुष्यों के दल का दल आकर कहने लगा "दयाल बाबू तुम इस स्थान को परित्याग करते हो, हम लोगों का क्लेश कैसे निवारण होगा?"

चेत नाथ ने सब को समझाकर कहा 'कि हम शीघ्र ही अपनी जननी को सङ्ग ले कर पञ्जाब में लौट आवेंगे। हम नरक सदृश बङ्गदेश में कभी निवास नहीं करेंगे।" ११८८ साल के माघ मास (जनवरी सन १७८२ ई०) में चेत नाथ ने लक्ष्मण के साथ अपने देश की ओर यात्रा की।

बीसवां अध्याय।

सुप्रीम कोर्ट।

बिपद दारिद्र और दुःख सम्पूर्ण अवस्था में ही मनुष्य के शत्रु नहीं है। बिपद और दुःख राशि बंधु होकर मनुष्यों के हृदय को उन्नत करते हैं, गुरु होकर उनको सत्शिक्षा प्रदान करते हैं; नायक होकर उनको जीवन के संग्राम में चलाते हैं। बहुधा सम्पद और ऐश्वर्य्य अनेकानेक स्थल में शत्रु होकर मनुष्य को गर्बित करते हैं, अहंकारी बनाते हैं, उनके हृदय मन को कलुषित करते हैं, और परिणाम में उनको बिलासी, आलसी और बेकाम कर डालते हैं।

चिर संपद और अतुल ऐश्वर्य्य के अंक में प्रति पालित बंगदेशी सैंकड़ों ज़मींदारों के सन्तान, धनियों के संतान, अत्यंत मूर्ख ही रहे हैं, पशुजीवन भोग करते हैं। मनुष्यों के समान इनके हस्त पद, मनुष्यों के समान इनका अंग गठन, अवश्यही लाचार होकर हम इनको भी मनुन्य कह सकते हैं। किन्तु इन की विद्या बुद्धि, इनका कार्य्य कलाप, इनका आचार व्यवहार देखने से कौन साहस कर कह सकता है कि इन में भी मनुष्य आत्मा है ?

बंग महिला सत्यवती देवी अब स्वामी का उद्धार करने के निमित्त कलकत्ता आई हैं। इसके पूर्व अलौकिक साहस और वीरत्व प्रकाश कर श्वसुर को कारागार से मुक्त कर चुकी हैं। उनका यह साहस, वीरत्व अलौकिक त्याग स्वीकार का भाव किसने उनको दिया है? किस बिद्यालय में उन्हों ने ऐसी सत्शिक्षा लाभ की है? जब सम्पत्ति की गोद में सोई हुई थीं तब वह क्या थीं, अब बर्तमान बिपत राशि ने उनको क्या कर डाला? उनका हृदय मन कितना समुन्नत हुआ है, इस बिषय में परीक्षा करने के लिये उनके मुख की वार्ता स्मरण करना उचित है। उनके वृद्ध श्वसुर जिस दिन पकड़े गये थे, उसी दिन स्वयं उन्हों ने कहा कि अनेक बिपद और संकट में पड़कर मैंने अनेक शिक्षा पाई है संपद की गोद से भ्रष्ट होने के पूर्व स्वामी को समय २ सदनुष्ठान से विरत रहने के लिये कहती थीं। किन्तु अब कहती हैं, कि मेरा पति देवता है मैं पहिले उन्हें न चीन्ह सकी। तो मनुष्य बिपत्ति में पड़ कर परमेश्वर पर क्यों दोषारोप करता है? बिपद मनुष्य का बंधु, बिपद

मनुष्य का गुरु, बिपद मनुष्य का नायक है।

बिपद ने सत्यवती को अलौकिक साहस प्रदान किया है। वह स्वामी के उद्धार के अर्थ अब कलकत्ता आई हैं। मालदह के अन्तरगत पंडुवा के जङ्गल से बराबर पैदल चली आई हैं। तीन ही दिन में कलकत्ता आ पहुंचीं, दिन रात्रि में पथ में बहुत बिश्राम नहीं किया रङ्गपुर में युद्ध आरम्भ हो गया है। इस समय प्रेमानन्द के वहां न जा सकने से, सम्पूर्ण चेष्टा, सम्पूर्ण उद्यम बिफल होगा। इस हेतु बङ्ग महिला सत्यवती प्रायः सौ कोस की राह तीन दिन रात्रि में चली आई हैं! कलकत्ता यात्रा करने के समय ही उन्हो ने पुरुष का बेश धारण कर लिया है। कलकत्ता आकर रामकृष्ण अधिकारी इस नाम से अपना परिचय देती हैं।

किन्तु यहां पहुंचते ही सुना, कि सुप्रीमकोर्ट में दरखास्त न करने से उनके स्वामी के कारागार से मुक्त होने का उपाय नहीं है। इस समय राजस्व अदा करने के निमित्त या अन्य कोई कारण से ईस्ट इन्डिया कम्पनी के गवर्नर अथवा और अन्य कर्मचारीगण जिन सब देशीय मनुष्यों का कैद करते

उनके सुप्रीमकोर्ट में दर्खास्त करनेही से उन के कारागार से मुक्त होने के लिये हेबियस कौर्पस नामक परवाना दिया जाता। सुप्रीम कोर्ट से ईस्ट इन्डिया कम्पनी के कर्म्मचारियों का बहुतही बिरोध था। सुतरां ईस्ट इन्डिया कम्पनी के कर्म्मचारी गण जिनको कैद रखते सुप्रीमकोर्ट उनको छोड़ देता।

इस अध्याय के समाप्त करने के पूर्व पाठक गण के जानने के लिये हम यहां सुप्रीम कोर्ट के और ईस्ट इन्डिया कम्पनी के कर्म्मचारियों में परस्पर जो झगड़ा उपस्थित हुआ था, उसी को प्रगट करते हैं।

सुप्रीमकोर्ट के स्थापन के पूर्वही कलकत्ता में मेयर कोर्ट नामक एक बिचारालय था। ईस्ट इन्डिया कम्पनी के अङ्गरेज़ कर्म्मचारियों में से ही मेयरकोर्ट के बिचारकगण चुन लिये जाते थे। किन्तु ईस्ट इन्डिया कम्पनी के कर्म्मचारियों में प्रायः सबही घोर अत्याचार और निष्ठुर व्यवहार करके देशीय मनुष्यों का धन लूटते थे। इसी से मेयर कोर्ट के द्वारा किसी प्रकार के सुबिचार होने की सम्भावना नहीं थी। जो लोग रात्रि को अस्त्र शस्त्र लेकर

चोरी डकैती करते, दिन में वही बिचार का वस्त्र पहिन कर, मेयर कोर्ट के बिचारासन पर बैठ उन्हीं सम्पूर्ण अत्याचारों का बिचार करते। इसी प्रकार मेयर कोर्ट का सद्विचार होने लगा।

किन्तु डान्डास आदि इङ्गलैंड के कई एक सहृदय मनुष्य मेयर कोर्ट का सद्विचार सुनकर अत्यन्त दुःखित हुए। उन्होंने इङ्गलैंडेश्वर की ओर से कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट के संस्थापन का प्रस्ताव किया। इसी से मेयरकोर्ट एबालिश (मनसूख) होकर कलकत्ता में सुप्रीमकोर्ट स्थापित हुआ। सर इलाइजा एमपी चीफ़ जस्टिस के पद में, और हाइड, लिमेस्टर और चेम्बर्स ये तीनों साहब कनिष्ट जज के पदमें नियुक्त होकर आये थे। किन्तु चाहे सुप्रीम कोर्ट कही और चाहे मेयर कोर्ट कही, लङ्का में जिसने प्रवेश किया वही हनुमान है। अमृत फल के लोभ को कोई भी त्याग नहीं सक्ता, सबही वृक्षकी जड़ को अकेले ग्रास करना चाहते हैं, सबही एकाधिपत्य के निमित्त लालसा करते हैं। सुप्रीम कोर्ट के जज सम्पूर्ण विषय और देश के सम्पूर्ण मनुष्यों पर अधिकार करना चाहते हैं।

वारेन हेस्टिङ्गस पूर्व में अपने विपक्ष दल के आक्रमण से अपनी रक्षा के अर्थ दो बार सुप्रीमकोर्ट के शरणागत हुए थे। उस समय वह सुप्रीम कोर्ट को सब से ऊंचा अधिकार देना अस्वीकार नहीं करते थे। किन्तु मृत्यु ने उन के विपक्ष दल को क्षीण कर दिया है अब वह सुप्रीम कोर्ट की आधीनता क्यों स्वीकार करेंगे। सुतरां सुप्रीम कोर्ट से गवर्नमेन्ट का विवाद उपस्थित हुआ।

सुप्रीम कोर्ट गवर्नमेन्ट के बिरुद्ध चरण करने लगी। राजस्व आदान के निमित्त अथवा अन्य किसी कारण से जिन देशीय मनुष्यों को गवर्नमेन्ट क़ैद करती; सुप्रीम कोर्ट उनको छोड़ने लगी।

इस समय सुप्रीम कोर्ट से गवर्नमेन्ट का बीवाद होने ही से अनेकानेक मनुष्यों को वारेन हेस्टिङ्गस और गंगागोबिन्द सिंह के अत्याचार से छुट्टी मिली थी।

रामकृष्ण अधिकारी नामक कपट रूप धारिणी सत्यवती से कलकत्ता के सब्ही कहने लगे कि सुप्रीम कोर्ट में दरखास्त करने से प्रेमानन्द गोस्वामी दो एक मास में छूट जायेंगे। किन्तु रङ्गपुर की ओर युद्धा-

रम्भ हुआ है। दो एक मास और प्रेमानन्द को क़ैद में रखने से उनकी सम्पूर्ण चेष्टा निष्फल होगी। उनके युद्ध क्षेत्र में उपस्थित न रहने से अनेक बेमयदि घटनाओं की सम्भावना है। इसके सिवाय सुप्रीम कोर्ट में दरख़ास्त करने में बहुत खर्च की आवश्यकता है। किन्तु सत्यवती को किसी प्रकार ख़र्च उठाने का सामर्थ नहीं।

कलकत्ते का जेल देवी सिंह के जेल के समान नहीं है. जेल में प्रवेश कर स्वामी से भेंट करने के लिये वह अत्यन्त चिन्ता से आकुल हो गई!

इस समय गंगागोविन्द सिंह भी कलकत्ते में नहीं हैं। वह मातृ श्राद्ध के प्रसंग से कांदीके अन्तरगत अपने पैतृक बास स्थान में गये हैं।

कलकत्ता से सैंकड़ों ब्राह्मण पण्डित गङ्गागोबिंद के मातृ श्राद्ध के प्रसंग में उसके बासस्थान को जाते हैं। येही सब मनुष्य परस्पर में कहते हैं, कि मातृ श्राद्ध के दिन दीवान गंगागोविन्द पूर्णतः कल्पतरु होकर सब की प्रार्थना पूर्ण करेंगे। उनसे जो कोई उस दिन जा कुछ चाहेगा, वह तुरन्त ही उसको वही प्रदान करेंगे।

इन सब मनुष्यों की वार्त्ता श्रवण कर सत्यवती ने मनही मन स्थिर किया, कि ब्राह्मण कुमार के वेश में गंगागोविन्द के निकट जाकर, अपने स्वामी के कारागार से मुक्त करने की प्रार्थना करूंगी। गंगा-गोविन्द अपना वृत पालन के लिये निश्चय ही लाचार हो कर मेरे स्वामो को कारागार से मुक्त कर देंगे।

ऐसा स्थिर कर वह भो अन्यान्य मनुष्यों के साथ गंगागोविन्द के घर की ओर चली।

—**—

एक विंश अध्याय।

दच्च यज्ञ से भी विशेष।

Gunga Gcvind—"a name at the sound of the which all India turns pale, the most wicked, the most atrocious, the boldest, the most dexterous villain that ever the rank servitude of that country has paoduced

Edmund Burke.

गङ्गागोबिंद—सो वर्ष पूर्व यह नाम सुनतेही बङ्गवासियों का हृदय विशेष कम्पित होता था। देश के सम्पूर्ण ज़मींदार इनके पग तलों पर मस्तक घिसते थे। नज़र हाथ में लेकर वह लोग इनके सन्मुख खड़े रहते थे। बङ्गदेश के छोटे बड़े बालक वृद्ध सबही गङ्गागोबिन्द का भय करते थे। क्यों न वह ऐसा करेंगे। भारतवर्ष के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स् गङ्गागोबिन्द के कृतज्ञता के पाश से बन्ध कर उनके क्रीत दास हो गये हैं। गंगा-गोबिन्द देश के सकल मनुष्यों के धन लूट लूट कर हेस्टिंग्स् का पौकेट (खीमा) पूर्ण करने लगे। प्राण सौंप के चेष्टा कर हेष्टिंग्स् की घूस का संग्रह कर देने लगे। हेष्टिंग्स् के उपकार के अर्थ वह

प्राण त्याग करने में भी रुक नहीं सकते हैं इसी से हेस्टिंग्स् भी गंगागोविंद के क्रीत दास हो गये।

अभी गंगागोविंद को मातृ बियोग हुआ है। उन्होने मनमें स्थिर किया है कि विशेष धूमधाम से मातृश्राद्ध करेंगे। नवकृष्ण मुंशी ने मातृश्राद्ध में नव लाख रुपया व्यय किया है। नव कृष्ण की अपेक्षा इनका पद प्रभुत्व बहुत ऊंचा रहा है। यदि नव कृष्ण के मातृश्राद्ध की अपेक्षा उनके मातृश्राद्ध में अधिकतर समारोह न हुआ, तो उनका यह पद प्रभुत्व वृथा है।

गंगागोविन्द ने मातृश्राद्ध के समय वारेन हेस्टिंग्स् से सहायता की प्रार्थना किया। हेस्टिंग्स् ने तत्क्षणात बङ्गदेश के प्रत्येक ज़िला के कलेक्टर और उनके दीवान के निकट पत्र लिख भेजा।

"गङ्गागोविन्द की मातृश्राद्ध को मेरी मातृश्राद्ध समझ कर, इस श्राद्ध के निर्वाहार्थ तुम लोग प्रत्येक अपने २ ज़िले में जितने प्रकार का उत्कृष्ट आहार द्रव्य पा सको उसे भेज दो। इस विषय में कभी शिथिलता या वेपरवाही न करना तुम लोगों की प्रेरित जिन्सों का मूल्य पीछे से दिया जायेगा"।

हेस्टिङ्गस के इस सरक्यूलर के पाने पर प्रत्येक ज़िला के कलेक्टर के दीवान लोग अपने अपने अधिकार सीमा के अंतरगत भिन्न भिन्न हाट बाज़ार में अनेक प्रकार के फल मूल और अन्यान्य आहार द्रव्य ख़रीदने के लिये बरकन्दाज़ों को प्रेरण करने लगे। सम्पूर्ण बंग देश में पूर्णतः हल चल पड़ गई। श्रीहट्ट के पूर्व सिवाना से बिहार के पश्चिम प्रान्त पर्यन्त; और रंगपुर दिनाजपुर के उत्तर छोर से समुद्र तटस्थ डायमन्ड हार्बर के दक्षिण प्रदेश पर्यन्त संपूर्ण देश के हाट बांज़ार में केवल गंगा गोविन्द के मातृश्राद्ध का द्रव्यादि ख़रीद होने लगा।

किन्तु सम्पूर्ण द्रव्य बाकी में ख़रीदना पड़ा। हेस्टिङ्गस ने संपूर्ण कलेक्टरों के निकट लिखा कि श्राद्ध के पश्चात द्रव्यादि के मूल्य का हिसाब तैयार होगा। कलेक्टरों के दीवानों ने अपने अधीन के जमादार और बरकन्दाज़ों को जिन्स ख़रीदने की आज्ञा दिया। जमादार और बरकन्दाज़ गण ने जिस दूकान में जिस जिन्स को पाया, उन सबकी बाकी में लेने लगे। उनका और दर भाव नहीं करना पड़ा। सरकारी कारिन्दों के हाथ जिन्स बेची जाती है, बिल भेजने ही

पर रुपया पायेंगे। इनका और दर दाम करने का क्या प्रयोजन है ?

उन सम्पूर्ण द्रव्यादि खरीदने के बहाने भिन्न भिन्न ज़िला के बरकन्दाज़ गण ने बेचनें वालों से जैसा व्यवहार किया था, उसे बिस्तार से लिखने से पुस्तक का आकार और भी पांच सात पृष्ट बढ़ाना पड़ेगा। किन्तु पाठकों से हम क्षमा मांगते हैं। पुस्तक का स्वरूप और बढ़ा नहीं सकते। संक्षेप में इस संबंध की दो एक घटना प्रकाशित करने से पाठक गण सम्पूर्ण अवस्था समझ सकेंगें।

जिन सम्पूर्ण फलों के थोड़े दिन में पक कर नष्ट होने की सम्भावना है, वे सब कृष्ण नगर आदि निकट के स्थानों में क्रय करना पड़ा। नदिया के अन्तरगत शान्तिपुर के बाज़ार में ग्यारह वर्ष की एक बालिका कई एक केला बेचने आई थी। कलेक्टरी के बरकन्दाज़ गण तब केला इत्यादि विविध प्रकार के फल संग्रह करते थे। वह बालिका के हस्त से कई एक केला ले गए।

बालिका आंखों में आंसू भर कर कहने लगी— "मेरी मा अंधी है—कल तीसरे पहर से हमारे घरमें

चावल नहीं था—अभी तक कुछ भी नहीं खाया है—इन कई एक केलों को बेंचकर चावल मोल लूंगी—मुझे केला के दाम दो।"

बरकन्दाज़ साहब ने कहा चुप रह बदज़ात छोकड़ी, पीछे से दाम मिलेगा—अभी घर जा।

बालिका भय और त्रास से खाली हाथ घर चली गई।

हुगली के अंतरगत वर्तमान उलवेड़िया के निकटवर्ती किसी स्थान में चौदह वर्ष का एक बालक कच्चे नारियल बेचता था। बरकन्दाज़ गण उसके कई एक नारियल ले चले।

बालक ने रोते २ कहा "नारियल का पैसा दो अपने बाबा के लिये गांजा लेऊंगा। बाबा के पास आज गांजा नहीं है। गांजा न ले गया तो घर जाने पर बाबा मुझे मार डालेंगे। मेरे नारियल का पैसा देव—मेरे नारियल का पैसा देव।"

बरकन्दाज़ साहब ने बालक को धक्का देकर गिरा दिया और नारियल लेकर चले गये। बालक अपने पिता के भय से फिर गृह को नहीं लौटा। भाग कर वह कहां चला गया उसका कुछ समाचार नहीं पाया गया।

दिनाजपुर का एक स्त्री एक टोकरी आलू बेंचने के लिये बैठी है। एक बरकन्दाज़ आकर उसकी आलू की टोकरी धर कर खींच खांच करने लगा।

स्त्री छाती के नीचे टोकरी रख कर बार बार कहती है "पैसा न देगा—तो नहीं दूंगी—नहीं दूंगी, नहीं दूंगी।"

बरकन्दाज़ गण स्त्री को ढकेल कर उस के सम्पूर्ण आलू लेकर चले गये।

बाकरगंज के अन्तरगत कोखाली के बाज़ार में १७ या १८ वर्ष का एक युवा मुसल्मान सात आठ टोकरी चावल लेकर बेंचने बैठा है। चावल की टोकरी उस के सामने है, उसके बाप चचा और मामा नदी के घाट पर नाव के एक प्रतिष्ठित आदमी के साथ चावल का दाम ठीक कर रहे हैं। इसी समय ईस्ट इंडिया कम्पनी का एक बरकन्दाज़ चावल ख़रीदने के लिये वहां पहुंचा और उस युवा के सामने की चावल से भरी टोकरी उठा कर चलने लगा। युवा मुसल्मान चिल्ला २ कर कहने लगा "ए बाबू, चाचा हो, ए मामा, देखो बरकन्दाज़ चावल लिये जाता है।"

उसका चिल्लाना सुन कर उसके बाप चाचा ओर मामा सब पहुंच गये। अब बरकन्दाज़ से चावल छीन कर उसे मार २ भगाने लगे। बरकन्दाज़ मार खा कर भागे और कोतवाल के नज़दीक जा कर इज़हार दिया कि हमारे ख़रीदे हुए चावल को कौखाली के मुसल्मानों ने डाका देकर ले लिया। कोतवाल ने उसी समय कौखाली की बाज़ार से तीस आदमियों को पकड़ कर डाकू कह के ढाका चालान किया। लोगों में यह किम्बदन्ती थी कि कौखाली में बहुत से डाकू रहते हैं। चालान किये हुए लोग तीन चार महीने के बाद पांच पांच वर्ष क़ैद किये गये।

इसी तरह दीवान गंगागोबिन्द सिंह के मातृ श्राद्ध की सामग्री आने लगी। श्राद्ध का दिन समीप आया, सब सामग्री उनके घर पहुंचने लगी। प्रायः बीस लाख लोगों के आहार करने योग्य सामग्री का संग्रह हुआ। गंगागोबिन्द सिंह के घर में श्राद्ध के पन्द्रह दिन पहले ही से लोगों की धूम हो गई, बोध हुआ पूरे तीन कोस तक लोगों के ठहरने के लिये छप्पर का घर तय्यार किया गया था।

इधर देश के सभी राव रावल ज़मींदार तालुके-दार रईस उमराव को निमंत्रण दिया गया। गंगागोबिन्द सिंह का निमंत्रण पत्र सभों ने फौजदारी अदालत का संमन समझा। और यह बिचारा कि निमंत्रण रक्षा न करेंगे तो गंगागोबिन्द सिंह असंतुष्ट होंगे। ब्रह्मा विष्णु और शिव के असंतुष्ट होने से मनुष्य रक्षा पा सकता है। किन्तु गंगागोबिन्द के असंतुष्ट होने पर किसी की रक्षा नहीं हो सकती।

नदियाके राजा कृष्णचन्द्र ने निमंत्रण पत्र पाकर अपने पुत्र राजा शिवचंद्र को गंगागोबिन्द के घर जाने को कहा राजा शिवचन्द्र अत्यन्त जाति के अभिमानी थे। वह गंगागोबिन्द के समान किसी कायस्थ के घर जाने में पहले सम्मत नहीं हुए।

तब राजा कृष्णचन्द्र ने कोपित होकर कहा "बाबू तुम्हारे न जाने से मैंही ऐसी बीमारी की अवस्था में गंगागोबिन्द के घर जाऊंगा। गंगागोबिन्द को मैं कभी असन्तुष्ट न करूंगा।"

राजा शिवचन्द्र ने देखा कि हम नहीं जाते तो मेरे पिता बीमारी की अवस्था में गंगागोबिन्द के घर जायेंगे। सुतरां उसने गंगागोबिन्द के घर जाना

स्वीकार किया। राजा कृष्णचन्द्र प्रायः बीमारी की अवस्था में काल व्यतीत करते थे इस लिये समय समय पर वह शिवचन्द्र को कलकत्ता जाकर गंगा-गोबिन्द का दरबार करने को कहते। किन्तु शिव-चन्द्र गंगागोबिन्द के निकट जाने को स्वीकार नहीं करता। इस लिये महाराज कृष्णचन्द्र गंगागोबिन्द के निकट पत्र में लिखते—

"दरबार असाध्य एव अवाध्य
केवल भरसा गंगागोबिन्द।"

गंगागोबिन्द के मातृ श्राद्ध के पूर्व दिन राजा शिवचंद्र आ पहुंचे। गंगागोबिन्द उनको अत्यन्त समादर से ग्रहण कर श्राद्ध की संपूर्ण तैयारियां दिखाने लगे।

शिवचन्द्र एक हज़ार मनुष्यों को संग ले कर आये थे। उन्हीं ने सोचा था कि अनेक मनुष्य संग जाने से गंगागोबिन्द हमारे आहार के उपयोगी द्रव्यादि देने में असमर्थ होंगे। अवश्य हम अनायास हो गंगागोबिन्द को लाचार कर आ सकेंगे।

शिवचन्द्र के पहुंचने पर प्रायः पांच हज़ार मनुष्यों के आहार योग्य द्रव्यादि गंगागोबिन्द ने उनके रहने के गृह में पहुंचा दिया। शिवचन्द्र ने

तुरन्त ही उस सम्पूर्ण सामग्री को कङ्गालों को दान कर दिया। गंगागोबिन्द ने फिर पांच हज़ार मनुष्यों के आहारोपयोगी द्रव्यादि भेजा। शिवचन्द्र ने उसे भी तुरन्त ही कंगालों को दान कर दिया। शिवचन्द्र की इच्छा थी कि गंगागोबिन्द को लाचार करेंगे। किन्तु गंगागोबिन्द ने इतनी अधिक सामग्री संग्रह किया था कि क्रमशः पांच बार शिवचन्द्र के डेरे में इसी भांति आहार जिन्स भेजा। अन्त में शिवचन्द्र ने अवाक् होकर गंगागोबिन्द से कहा—

"भाई तुम्हारा यह दक्षयज्ञ का आयोजन कुबेर का भण्डार खोल कर बैठा है।"

गंगागोबिन्द ने किञ्चित् हास्य करके कहा "जी, दक्ष यज्ञ से भी विशेष।"

शिवचन्द्र यह वार्त्ता श्रवण कर मनही मन अत्यन्त विरक्त हुए। उन्हों ने सोचा था कि हमारी वार्त्ता के प्रत्युत्तर में गंगागोबिन्द नम्रता का अवलंबन कर के अपने को अवनत करेगा। किन्तु गंगागोबिन्द ने उसके बदले में, विशेष गर्व प्रकाश कर के कहा "दक्ष यज्ञ से भी विशेष।"

गंगागोविन्द की ऐसो स्पर्द्धा देख कर शिवचन्द्र मुख फुला कर बैठे।

गंगागोबिन्द ने उनके मन का भाव समझ कर कहा। "महाराज क्या दक्ष यज्ञ से भी विशेष नहीं है? दक्ष यज्ञ में शिवका आगमन नहीं हुआ; किन्तु मेरे घर में स्वयं शिवचन्द्र उपस्थित हैं।"

तीक्ष्ण और आमोद वाक्य से सब ही सन्तुष्ट हुए। शिवचन्द्र इस वार्त्ता को श्रवण कर अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। उन्हों ने चलने के समय सोचा था कि गंगागोबिन्द के घर में कभी जल स्पर्श भी नहीं करेंगे, किन्तु अन्त में इस श्राद्ध के प्रसंग में गंगागोबिन्द के घरमें आहार आदि भी उन्होंने किया।

आयेहुए राजा और ज़मींदारों की यथोचित आदर सहित अभ्यर्थना कर रात्रि में गंगागोबिन्द ने शयन के लिये शयनागार में प्रवेश किया। देश की बहुत दिन से प्रचलित प्रथा के अनुसार मातृ वियोग होने पर एक मास तक कोई पत्नीशय्या में शयन नहीं करता। किन्तु रात्रि में गंगागोबिन्द प्रायः निद्रित अवस्था में चीत्कार कर उठते। इस लिये उनकी सहधर्मिणी को इस समय में भी गंगागोबिन्द के शयनागार से

निकट के प्रकोष्ठ में रहना पड़ता। गंगागोबिन्द के चिल्ला उठने पर; वह उनकी शय्या प्रकोष्ठ में जाकर स्वामी के मस्तक पर जल सिञ्चन करती, स्वामी को पंखा झलती। स्वामी के इस स्वप्न का वृत्तान्त प्राण जाने पर भी अन्य को जानने नहीं देती।

गंगागोबिन्द ने विश्राम करने के निमित्त शयनागार में प्रवेश किया। किन्तु सुनिद्रा से उत्पन्न विश्राम की शान्ति उनके भाग्य में नहीं थी। उनको किञ्चित निद्रा का आवेश होते ही वह प्रथमतः अन्यान्य दिवसों की भांति आज भी स्वप्न देखने लगे, छूरी हस्त में लेकर कमला देबी मृत दो सन्तान को कक्ष में लेकर उसकी ओर दोड़ी आती है। उसने निकट आतेही उनके वक्ष में छूरी पैठा दिया है। मृत दोनों सन्तान को उनके मस्तक पर पटक दिया है। और पीछे से कमला के स्वामी जगन्नाथ भट्टाचार्य्य अपनी रस्सी से उन के गले में बन्धन करते हैं।

गंगागोबिन्द की सहधर्मिणी ने इसके पूर्व एक दिन स्वामी को कह रक्खा था, कि कमला देबी को फिर जब स्वप्न में देखना तब स्वप्न ही में उसके पगतल में

मस्तक घिस कर कहना, कि "मा मुझे क्षमा कीजिये— इस ब्रह्म हत्या के पाप से मेरा उद्धार कीजिये।"

सहधर्मिणी का ऐसा उपदेश आज निद्रावस्था में गंगागोविन्द की स्मरण हुआ। कमलादेवी के पदतल में मस्तक धर कर कहा मा! आप परम साध्वी हैं, मुझे क्षमा कीजिये—इस ब्रह्म हत्या के पाप से मेरा उद्धार कीजिये।"

किन्तु स्वप्नावस्था में गंगागोबिन्द के यह वार्त्ता कहते ही, कैसी भयानक अवस्था उपस्थित हुई। वह निद्रितावस्था में देखने लगा, कि सैंकड़ों ब्राह्मण, सहस्रों कृषक उसकी ओर दौड़े चले आते हैं। वह सब ही कहने लगे, "राजस्व वृद्धि करके हेस्टिंग्स की प्रसन्नता लाभ करने के निमित्त तूने हम को सम्पूर्ण धन से जुदा किया है। हमारी सब ब्रह्मत्व हमारी सम्पूर्ण जमींदारी तूने नष्ट किया है। तेरे अत्याचार से हम वंश समेत पृथ्वी परित्याग कर आये हैं। आहार के बिना हमारे शिशु सन्तान मर गये हैं। आज बारह वर्षों से अत्याचार करता है। इसका फल तुझे अभी देंगे।"

इन सकल ब्राह्मणों में से चार पांच के गले में

बहुत बड़ी रस्सी लपटी हुई है। उन्हीं ने, बोध होता है कि अपने स्वत्व से बञ्चित होने पर, पुत्र कन्याओं का दुःख कष्ट सह न सकने से फांसी लगा कर प्राण त्याग किया था। इन में से किसी किसी ने गंगागोबिन्द की छाती को दबाया, किसी ने मुख को दबाया।

गंगागोविन्द पूर्णतः आकुल हो उठे। आज अब उनको चिल्लाने की शक्ति नहीं रही। छाती और गले पर पाषाण के चापने से मनुष्य की जैसी अवस्था होती है, आज गंगागोविन्द की वैसी ही हुई।

कुछ काल के पश्चात वह देखने लगे, कि सम्मुख में एक रक्त की नदी बह रही है—सैंकड़ों मृत शरीर उस नदी में बहते हैं, उन्हीं सब मृत शरीरों से दुर्गंध निकलती है। सम्मुखस्थ ब्राह्मण और कृषक गण गंगागोविन्द को उसी नदी में डालने के निमित्त उनके हाथ पांव बांध रहे हैं।

हस्त पद बांधने के पश्चात उन्होंने उनकी छाती और गले का चांप रक्खा था, उनके खड़े होकर उसी नदी में फेंकने की तइयारी करते ही, वह अत्यन्त उच्च स्वर से चीत्कार कर उठे।

उसके आज के चीत्कार शब्द से उसकी सह-धर्मिणी के भिन्न गृह के अन्य मनुष्य भी जाग कर शीघ्र ही उसके शयन प्रकोष्ट में प्रवेश करने लगे। सबों ने देखा, कि वह जाग कर शय्या पर बैठा हुआ कांप रहा है।

अन्य कोई उसके इस स्वप्न का वृत्तान्त न जान सके, इस अभिप्राय से उसकी सहधर्मिणी ने और सबों को बिदा कर के ठीक दमयन्ती की भांति स्वामी के मस्तक को गोद में लेकर जल सोचने और पंखा झलने लगी।

किञ्चित काल के पीछे गंगागोबिन्द ने कुछ स्वस्थ होकर कहा तुम्हारे उस उपदेश के अनुसार आज स्वप्नावस्था में कमला देवी को सम्बोधन कर कहा था "मा! मुझे क्षमा कीजिये इस बात के कहते ही कमलादेवी तो अदृश्य हुई; किन्तु तुरन्त ही सैकड़ों ब्राह्मण और सहस्रों कृषक मेरी ओर को दौड़ आकर मुझे बांध कर सामने की एक रक्त नदी में फेंकने को उद्यत हुए। वह जब मेरी छाती को चाप कर बैठे तब मेरा कन्ठ रुक गया।

गंगागोबिन्द की इन सम्पूर्ण वार्त्ताओं को श्रवण कर उसकी स्त्री कुछ काल चुप रह कर चिन्ता करने

लगी। किन्तु क्या आश्चर्य्य है! साध्वी रमणी गण किसी पुस्तक इत्यादि का पाठ अथवा किसी शास्त्र का अध्ययन न करने से भी केवल स्वाभाविक बुद्धि द्वारा धर्म्म के निगूढ़ तत्व सम्बन्ध में कभी कभी अनेका नेक युक्ति सङ्गत अनुमान कर सकती हैं। गंगागोविन्द की स्त्री अत्यन्त पुण्यवती थी। इसके पुण्य फल ही से बोध होता है पीछे लाला बाबू की भांति परम धार्मिक महात्मा ने इस परिवार में जन्म लिया था।

पुण्यवती साध्वी ने अपने स्वामी का स्वप्न वृत्तांत सुनकर कहा नाथ! मुझे बोध होता है कि कमला देवीसे क्षमा प्रार्थना करतेंही भगवान ने तुम्हारे ऊपर सन्तुष्ट होकर तुम्हारे अन्यान्य पाप और कुकार्य्यों की ओर तुम्हारे चक्षु फिरा दिये हैं। एक कुकार्य्य की ओर दृष्टि पड़ने ही से क्रमशः अन्यान्य कुकार्य्यं की ओर भी दृष्टि पड़ती है। इन संपूर्ण मनुष्यों के निकट ही आप क्षमा प्रर्थना कीजिये और आप के द्वारा जिन जिन मनुष्यों का अनिष्ट हुआ हो उनके उपकार करने की चेष्टा कीजिये। परमेश्वर निश्चय ही आप के ऊपर दया करके आप की इस कुकर्म्म से रक्षा करेंगे।

गंगागोविन्द ने कहा "प्रिये! मुझे अतिशय भय होता है। मैं फिर क्षमा प्रार्थना नहीं करूंगा। एक से क्षमा प्रार्थना करते ही आज हज़ार आदमी ने आकर दबाया। और इन हज़ार हज़ार मनुष्यों से क्षमा प्रार्थना करने से, लाखों मनुष्य आकर मेरा प्राण संहार करेंगे। जिस स्वप्न को देखा है उसमें अभी तक मेरा प्राण कांपता है। इन सम्पूर्ण बात्तों को विस्मृति सागर में न डुबाने से अब मुझे सुख शान्ति नहीं है।

*   *   *

इस सकल कथा वार्त्ता के पीछे गंगागोविन्द ने फिर सोने के लिये स्त्री की गोद में मस्तक रखकर शयन किया। किन्तु पूर्ण निद्रा होते न होते फिर कैसा भयानक दृश्य देखने लगे। वही पूर्व की रक्त नदी इस बार पूर्णतः समुद्र हो गई। इस समुद्र का दूसरा पार नहीं दिखाई देता उसी अपार रक्त—सागर के पार्श्व में हम शयन करते हैं। बहुत दूर से एक स्त्री उनके निकट दौड़ी आती है। स्त्री के पीछे पीछे सहस्रों मनुष्य हाथ में लाठी इत्यादि विविध अस्त्र शस्त्र लिये हुए दौड़े आते हैं। स्त्री की

अपने निकट आते ही उन्हीं ने देखा कि हमारी जननी है। वह स्वप्नावस्था में उठ कर बैठे। उनकी जननी ने उनके निकट आकर उन्हें बल से पकड़ कर कहा "पुत्र! मेरी रक्षा करो—मेरी रक्षा करो। यह देखो सैंकड़ों मनुष्य मेरे पीछे दौड़े आते हैं।" पीछे से मनुष्यों का समूह क्रमशः निकट आया। उनकी जननी तब पुत्र के वक्ष में लुकने की चेष्टा करने लगी।

जन समूह में से कोई कोई श्री हट्ट की भाषा में व कोई कोई दिनाजपुर की भाषा में गाली देने लगे। इनमें से एक दस वर्ष की बालिका के पीछे पीछे एक वृद्धा रमणी लाठी ठेकती हुई आती थी। बालिका मानों अन्ध को लेकर भिक्षा मांगने चली है। किन्तु गंगागोविन्द के निकट आते ही वह बाण से घायल बाघिनी की भांति दन्त किड़किड़ा कर हाथ में की लाठी द्वारा गंगागोविन्द की पीठ पर प्रहार करने लगी। उसके पीछे से वृद्धा रमणी ने "मेरे क्षुधा से प्राण जाते हैं" कह कर उसका मस्तक जकड़ कर पकड़ा।

इसके पीछे एक अस्थिचर्म्मसार लम्बा पुरुष

गंजेड़ी के समान खों, खों, कर खांसता हुआ उनके निकट आया। उनका हाथ धर के खींच कर रक्त सागर के किनारे ले गया। समुद्र में एक बालक का शव बहता था। गंजेड़ी के उस बालक का मृत शरीर समुद्र से उठा कर उनकी ओर फेंकते ही वह चौंक उठे।

कुछ कालपर उन्हीं ने देखा, कि जन समूह में से चार पांच मनुष्यों ने दौड़ कर उनकी जननी को उस शोणित सागर में फेंकने की चेष्टा किया। वह तुरन्त ही "मा मा" कहके चिल्लाये और उठ खड़े हुए।

"फिर क्या हुआ—फिर क्या हुआ" कह कर उनकी सहधर्मिणी भी व्यस्त होकर उनके साथ ही साथ खड़ी हुई। और उनके मस्तक पर जल सिञ्चन करने लगी।

रात्रि के दो घड़ी के समय इस प्रकार से फिर गंगागोविन्द की निद्रा भंग हुई। उन्होंने जाग कर भय से फिर सोने की चेष्टा नहीं किया। चिन्ताकुल चित्त से बैठ कर स्वप्न का विषय सोचने लगे। संसार के इस पद प्रभुत्व को असार समझने

लगे। किन्तु रात्रि का अंत होते ही संसार के कोलाहल से सबही विस्मृत हो जाता है। विस्मृत सागर पूर्व रात्रि की मानसिक यन्त्रणा को पूर्णतः डुबा देता है।

—*—

द्वाविंश अध्याय ।

यह तो नदी का जल है नदी ही में गिराता है ।

आज गंगागोबिन्द का मातृ श्राद्ध है । प्रभात होते ही उनके भद्रासन से तीन कोस तक पथ पूर्णतः जन समूह से परिपूर्ण हुआ । निमन्त्रित ब्राह्मण पण्डित गण और अन्यान्य प्रतिष्ठित मनुष्यों के पूर्ब्ब कथित बास गृह में ऊपर से ऊपर आहारोपयोगी द्रव्यादि प्रेरित होने लगे ।

सैंकड़ों भिक्षा जीवी ब्राह्मण आकर दान की प्रत्याशा से एक स्वतन्त्र गृह में बैठ कर अपेक्षा करने लगे । निमन्त्रित शास्त्रज्ञ ब्राह्मण पण्डित गण अपने रहने के निर्द्दिष्ट गृह में बैठ कर दूर देश से आए अनेकानेक पण्डितों से शास्त्रालाप करने लगे । ये लोग निमन्त्रण में आये हैं इनको भिक्षा जीवियों के समान दान गृह में जाकर याचना करना नहीं पड़ता ।

कपट रूपी राम कृष्ण अधिकारी भिक्षा जीवियों के संग साधारण दान गृह में बैठ कर अपेक्षा कर रहे हैं । कुछ काल के पश्चात बहुत सी रौप्य मुद्रा संग लेकर

गंगागोविन्द के कर्मचारी गण भिक्षा जीवियों को विदा करने आये। किसी के हाथ में चार रुपया किसी के हाथ में पांच रुपया देने लगे। भिक्षुकों में से कोई कोई रौप्य मुद्रा पाकर सन्तुष्ट चित्त से विदा हुए। किन्तु कोई कोई और कुछ पाने की प्रत्याशा करने लगे। राम कृष्ण अधिकारी को रुपया देते ही उसने उसे अस्वीकार कर कहा "स्वयं दान कर्त्ता के भिन्न अन्य किसी के हस्त से दान ग्रहण नहीं करूंगा।

गंगागोविन्द आज एक स्थान में बैठे नहीं रह सके। वह कभी यहां, कभी वहां, कभी ब्राह्मण पण्डितों के रहने के गृह में जाकर सकल विषयों को देख भाल करते हैं।

साधारण दान गृह में भिक्षुक ब्राह्मण गण अत्यन्त कोलाहल करते थे, कोलाहल सुन कर वह उसी ओर चले। जिसने प्रथम ही चार पांच रुपया पाया है। उनमें से कोई कोई और कुछ याचना करते थे। गंगागोविन्द ने वहां आकर उनको एक एक रुपया और देने को कहा। सबही "महाराज की जय हो" कह कर आशीर्वाद देने लगे।

राम कृष्ण अधिकारी ने अनेक मनुष्यों के पीछे से गंगागोबिन्द के सम्मुख आकर कहा—

"महाराज मैं रुपया लेने का प्रार्थी नहीं हूं। गत पोष मास में रंगपुर के कई एक मनुष्य कारागार में रुद्ध हुए हैं, उनको वहां से मुक्त होने की प्रार्थना करता हूं।"

इस ब्राह्मण कुमार की वार्त्ता सुनते ही गंगागोविन्द की पिलही चमक उठी। उन्हीं ने कपट कर किसी अभिप्राय के साधनार्थ इनको कारा रुद्ध कर रक्खा है। देवी सिंह, गुडलेड साहब और हेस्टिंग्स के भिन्न और कोई उस कपट के विषय में कुछ भी नहीं जानते। ब्राह्मण कुमार की प्रार्थना सुन कर कहा "ठाकुर किसी कैदी को छोड़ने की मुझे शक्ति नहीं। तुम जो कुछ रुपया चाहोगे, वह अभी पाओगे।"

रामकृष्ण ने कहा "महाराज मुझे रुपयों की आवश्यकता नहीं। रंगपुर के उन पन्द्रह * मनुष्यों को कारा मुक्त कर दीजिये। उनका कारामुक्त होना ही आप से याचना करता हूं।

गंगागोविन्द। किसी को कारामुक्त करने की मुझे शक्ति नहीं।

* Vide note (17) in the appendix.

रामकृष्ण। आप ने शक्ति के अनुसार आज सभों की प्रार्थना पूर्ण करने की प्रतिज्ञा किया है; शक्ति रहते मेरी प्रार्थना पूर्ण न करने से आप का यह व्रत भंग होगा।

गङ्गा गोविन्द। तुम्हारे इस प्रार्थना को पूर्ण करने की मुझे शक्ति नहीं है तुम जितने रुपये चाहो, अभी दिलाता हूं।

राम कृष्ण। जी, आप रुपया दान करके केवल जल में जल बहाते हैं। नदी का जल लेकर फिर नदी ही में गिराने से कोई उपकार नहीं।

गङ्गा गोविन्द। जल में जल गिराते हैं? यह क्या?

राम कृष्ण। जी, देश के सब मनुष्यों की सम्पत्ति रुपया पैसा लूट करके उस का किञ्चित् अंश आज फिर कई एक मनुष्यों को देते हैं। नदी का जल लेकर नदी ही में गिराते हैं।

राम कृष्ण की इस वार्त्ता के सुनते ही गत रात्रि के स्वप्न का वृत्तान्त फिर गङ्गा गोविन्द को स्मरण हुआ। कुछ काल तक वह निर्वाक रहे।

राम कृष्ण ने फिर कहा—नदी का जल नदी ही में गिराने से तुम्हारी माता को कभी स्वर्ग नहीं

होगा यदि जननी के स्वर्ग लाभ की इच्छा है, तो निरपराधियों को अभी कारागार से मुक्त कोजिये।

गङ्गा गोविन्द सिंह का ऐसा अनादर करने में किसी ने कभी साहस नहीं किया। उन के चार आदमी राम कृष्ण को निकाल देने को आये। गङ्गा गोविन्द ने उन को रोक कर कहा "आज अभ्यागतों में से किसी को कर्कश वाक्य न कहना या उन को गृह से निकाल भी न देना।"

यह कह कर वह दूसरी ओर को चले गये। कपट रूपी राम कृष्ण अत्यन्त निराश हो गये। उन्हों ने यह आशा की थी कि मातृ श्राद्ध के दिन गङ्गा गोविन्द निश्चय ही मेरी प्रार्थना पूर्ण करेंगे। किन्तु उन की वह आशा बिफल हुई, व्यर्थ केवल रास्ता काटने में समय नष्ट हुआ।

उस ने निराश हो कर फिर कलकत्ता की यात्रा किया। अब सुप्रीमकोर्ट में दरखास्त करने के सिवाय और कोई उपाय नहीं। परन्तु सुप्रीमकोर्ट में दरखास्त करने में अधिक व्यय की आवश्यक्ता है। ओर उस से दो एक मास के भीतर छूटने की सम्भावना नहीं। रङ्गपुर के मनुष्य प्रेमानन्द का पथ निहार

रहे हैं। क्या करें, कुछ भी स्थिर नहीं कर सकते हैं।

इस ओर मातृ श्राद्ध के दो तीन दिन पश्चात् गङ्गा गोविन्द कलकत्ता को लौट आया। भिन्न भिन्न ज़िलों के कलेक्टरों के दीवानों को अपने अपने प्रेरित जिन्सों के मूल्य का हिसाब भेजने को लिखा। परन्तु सम्पूर्ण ज़िलों से कलेक्टरों के दीवान गण ने लिख भेजा कि अति अल्प मूल्य का इतना सामान्य द्रव्यादि प्रेरित हुआ था। प्रजा और ज़मींदार गणों ने अपनी इच्छा से दीवान बहादुर के मातृ श्राद्ध में उन जिन्सों को दिया था, वह कोई भी इन का मूल्य लेना स्वीकार नहीं करते।

किसी किसी कलेक्टर के दीवान ने लिखा "दीवान बहादुर का पत्र पाकर अत्यन्त लज्जित हुए। श्राद्ध के अल्प दिन रहने पर समाचार मिला था। इस ज़िले की सम्पूर्ण वस्तुओं के संग्रह करने में समय भी नहीं था जो कुछ फल मूल प्रेरित हुआ था उसे हमने अपने बगीचा ही से दिया है।"

परन्तु एक एक ज़िला से प्रायः बीस पचीस हज़ार रुपयों की वस्तुएं प्रेरित हुई थी। इन सम्पूर्ण वस्तुओं के संग्रह करने के समय उस का

चतुर्थांश बरकन्दाज़ गण ने रख लिया था कितना ही अंश दीवानों के गृह में गया था। तिस पर भी कई एक दीवान बाबू लोगों ने कहा, कि हमारे ख़ास उद्यान से फल मूल प्रेरण किया गया था।

—※—

त्रयोविंश अध्याय।

कारा मुक्त।

It was in a struggle to make him (Gunga Govind) do his duty, that, we fell under a charge of neglect of duty and disobedience of order. We were therefore divested of our trust.—*Evidence of Mr. Peter Moore in the trial of Hastings.*

सत्यवती कपट रूप से फिर कलकत्ते लौट कर स्वामी के उद्धार उपाय की चिन्ता करने लगी। इसे शीत वृष्टि धूप कुछ भी बोध नहीं होता। स्वामी के उद्धार की चिन्ता ने ही उसके हृदय में सम्पूर्ण रूप से अधिकार किया है। दिनको वृक्ष तले बैठना, रात्रिको वृक्ष तले सोना। आहार निद्रा प्रायः सबही को परित्याग किया है जिस जीर्ण वस्त्र द्वारा दिनको लज्जा निवारण करती, उसी के अंचल को डालकर रात को वृक्ष तले शयन करती। किन्तु इससे भी शरीर में किसी रोग ने प्रवेश नहीं किया।

जब नाना सुख सम्पद में श्वशुर के दो मंज़िले घर में बास करती थी तब एक रात्रि को द्वार न बंद करके सोने से, ओस शरीर में रोग उत्पन्न करता था। किन्तु आज बारह दिनों से वृक्ष तले शयन करती है, किसी रोगने उसके शरीर में प्रवेश नहीं किया। बिपत्ति रूपी कवच उसके शरीर की, रोग के आक्रमण से रक्षा करता है। चिन्तानल के सर्बदा हृदय में प्रज्वलित होने ही से अत्यंत शीत का बोध नहीं होता है।

माघ मास प्रायः अंत हुआ जाता है। आज माघ का इक्कीसवां दिन है, माघ के प्रथम दिन को ही रामानंद देवी सिंह के आदमियों से पकड़े गए थे। उसी प्रथम दिन से आज तक बङ्ग कुल बधू सत्यवती जिम सम्पूर्ण दुःसाध्य ब्यापार का साधन करती है, उनकी चिन्ता करने से आश्चर्य्य होता है। इन इक्कीस दिनों की कष्ट यंत्रणाने, इन इक्कीस दिनों की परीक्षा ने, उसको इक्कीस वर्षों का बोध प्रदान किया है।

पाठकगण को स्मरण होगा कि प्रेमानन्द गोस्वामी दो तीन मास हुए काशी से लक्ष्मण से बिदा हो कर स्वदेश में आये हैं। प्रथमतः उन्हों ने दिनाजपुर

में पहुंचते ही देबी सिंह के इन सकल अत्याचारों को देखा। पश्चात दिनाजपुर से पिता और स्त्री के अनुसन्धान के लिये रंगपुर को चले गये। वहां उनका कुछ भी पता नहीं मिला। रंगपुर के अनेकानेक ज़मींदारों ने घरद्वार छोड़ दिया है; वह तब अनुमान करने लगे, कि कदाचित उनके पिता और स्त्री किसी शिष्य के परिवार के संग भाग गये।

रङ्गपुर के साधारण मनुष्यों का दुःख कष्ट देख कर वह अत्यन्त दुःखित हुए। प्रजाओं के अत्याचार के निवारण करने के निमित्त उपदेश देने लगे। इस अत्याचार से निपीड़ित प्रजाओं के साथ सहानुभूति प्रकाश करे ऐसा कोई मनुष्य नहीं था, प्रेमानन्द की सहानुभूति पाकर प्रजा और अनेकानेक ज़मींदार उत्साहित हुए। अनेकों ने जीवन परित्याग कर अत्याचार के रोकने के लिये संकल्प किया। अनेकानेक भागे हुए ज़मींदार भी इन के संग योग देने में सम्मत हुए।

प्रजा की इस अभिसंधि को जान कर देबी सिंह बहुत भय भीत हुए। अत्याचारी लोग प्रायः कापुरुष और भीरु होते हैं। देवी सिंह के ऐसा डर-

पोक और कादर बङ्गाल में अत्यल्प ही देखे जाते थे। प्रजा विद्रोह के डर से देबी सिंह बहुत डर गये। और उन के प्रिय भाई गुडलैड साहिब भी बहुत डरे। दो एक ज़मींदार को अपने बशी भूत रखने के लिये वह लोग चेष्टा करने लगे। बङ्ग-देश में कादर ज़मींदारों का अभाव नहीं था। गौरी मोहन चौधरी नाम का एक ज़मींदार पहले कई बार हर राम, सूर्य्यनारायण और भेषधारी सिंह से अपमानित हुआ था। किन्तु अब उस ने देबी सिंह के अनुग्रह की प्रत्याशा में उसका पक्ष अव-लम्बन करके कपट से प्रेमानन्द और दूसरे कई एक मनुष्यों को देबी सिंह के निकट प्रेरण किया। विद्रोह निवारणार्थ देबी सिंह ने इनको कलकत्ता के जेल में भेजा।

जैसा कि देवी सिंह ने अत्याचार किया था, वह प्रकाश होने से क्या गङ्गा गोविन्द, क्या गुडलैड क्या वारेन् हेस्टिंग्स सब ही को पदच्युत होना पड़ेगा। इन सब ने ही अत्याचार को आश्रय दिया है। इसी से इस समय यह सम्पूर्ण अत्या-चार किसी प्रकार से प्रकाश न हो, उसी की सब

चेष्टा करने लगे। गङ्गा गोविन्द ने कपट कर देवी सिंह के प्रेरित इन सब को कैद रक्खा था। प्रेमानन्द आज प्रायः बीस दिन से जेल में हैं। कारागार से मुक्त होने का कोई उपाय न कर सके। उन की स्त्री सत्यवती भी कलकत्ता में आकर आज तक उन के कारागार से मुक्त करने का कोई उपाय निश्चय न कर सकी।

आज माघ का २१ वां दिन है सत्यवती और जगा कलकत्ता के एक रास्ते के पार्श्व में बट वृक्ष के तले बैठ कर चिन्ता करते हैं। मन ही मन परमेश्वर से स्वामी के कारागार से मुक्त होने की प्रार्थना करते हैं। सैकड़ों मनुष्य उसी रास्ते से ओफिसों (कचहरी) को चले जाते हैं। एक भला मनुष्य अनेक कागज पत्र हाथ में लेकर इसी वृक्ष के पार्श्वस्थित रास्ते से उत्तर की ओर जाता था। उस के बे जाने उस के हाथ से कई एक कागज़ राह में गिर गये। वह भद्र मनुष्य बराबर चला ही जाता है।

सत्यवती ने भद्र मनुष्य के हाथ से राह में कागज़ गिरते हुए देख कर, जगा को उस के पीछे २

दौड़ कर उस के हाथ में उन कागज़ों को दे आने के लिये कहा। जगा ने उस भद्र मनुष्य के पीछे २ दौड़ कर उस के हाथ में उन कागज़ों को दिया। भद्र मनुष्य कागज़ पाकर चौंक पड़ा। उस के हाथ में जो कागज़ थे उन को खोल कर देखा कि उन में से ये कागज़ उस की असावधानी से राह में गिर गये थे। इन कागज़ों को पाकर वह अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ और जगा से उसने कहा—

"बाबू तुम ने मेरा बड़ा उपकार किया है। इन कागज़ों के खो जाने से क्या मेरी फिर रक्षा थी? गङ्गा गोविन्द सिंह मेरा परम शत्रु है। वह निश्चय ही मेरे अपकार करने की चेष्टा करता।"

इस भद्र मनुष्य का नाम रामचन्द्र सेन है। गंगागोविन्द की कौन्सिल से अधिकांश मेम्बर गण की सम्मति से १७७५ साल में बरखास्त करने के पश्चात् फ्रांसिस फिलिप के अनुरोध से यह नायब दीवान के पद पर मुक़र्रर किये गये थे। किन्तु हेस्टिंग्स और बारवेल ने कर्नल मनसन की मृत्यु होने पर इनको पदच्युत कर, गंगागोविन्द को फिर उसी कार्य्य में बहाल किया।

इन्हीं ने जगा से प्रश्न किया "तुम क्या किसी नौकरी के लिये कलकत्ता आये हो? तुम से मेरा बड़ा उपकार हुआ है तुम्हारी क्या प्रार्थना है मुझ से कहो।

जगा ने कहा "महाशय मेरे मुनीब रामकृष्ण अधिकारी इस पेड़ के नीचे बैठे हैं। उन्हींने हो आप का कागज़ राह में पाकर मेरे द्वारा भेज दिया है। उनके एक स्वजन को गंगागोविन्द सिंह ने जेल में रक्खा है। उनके छूटने का क्या कोई उपाय आप कह देंगे? हम किसी नौकरी की प्रार्थना के लिये यहां नहीं आये हैं।

रामचन्द्र सेन ने तब रामकृष्ण के निकट आकर और उनका सम्पूर्ण वृत्तान्त सुन कर कहा।

अधिकारी महाशय आप को भय नहीं। आप को सुप्रीम कोर्ट में भी कोई दरखास्त नहीं देना पड़ेगा। आप के स्वजन के छूटने का, मैं आज ही एक उपाय कर दूंगा। मेरे संग राजस्व कमेटी के औफ़िस में चलिये।"

रामकृष्ण अधिकारी और जगा रामचन्द्र सेन के संग राजस्व कमेटी के आफ़िस में आये। रामचन्द्र

ने पीटर मूयर से इनका सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रकाशित किया। पीटर मूयर ने उनकी वार्त्ता सुन कर गंगागोबिन्द से गुप्त कैदियों को जेल में रखने का कारण पूछा।

गंगागोबिन्द उनको जेल में रखने का कोई प्रसन्नता कारक कारण न कह सके। और असली कारण उनसे प्रकाश भी नहीं कर सके। मूयर साहब तब उनको घुड़कने लगे और तुरन्तही प्रेमानन्द को छोड़ने का परवाना देने को कहा।

तीसरे प्रहर गंगागोबिन्द ने वारेन हेस्टिंग्स से यह सम्पूर्ण वार्त्ता कही। हेस्टिंग्स मूयर साहब पर अत्यन्त नाराज़ हुए। हेस्टिंग्स ने पूर्व ही स्थिर कर रक्खा था कि राजस्व कमेटी का सम्पूर्ण कार्य्य गंगागोबिन्द ही चलावेगा, कमेटी के मेम्बर गण पर केवल दस्तख़त का भार रहेगा। मूयर साहब ने गंगागोबिन्द के कार्य्य में हस्तक्षेप किया था, इस लिये हेस्टिंग्स ने प्रथम उसे ढाका प्रेरण किया। पश्चात क्रमशः सात घाट का जल पिला कर छोड़ा।

चतुर्विंश अध्याय।

स्वामी स्त्री।

प्रेमानन्द गोस्वामी और उस के संगी गण को छोड़ने का परवाना लेकर राजस्व कमेटी का प्यादा जेल की ओर चला; पुरुष वेष धारिणी सत्यवती और जगा भी उस के पीछे २ चले। जाने के समय सत्यवती ने जगा को प्रेमानन्द से अपना असली परिचय कहने को मना किया।

प्रेमानंद के कारागार से बाहर होते ही जगा और सत्यवती उस के निकट आ खड़े हुए। प्रेमानन्द जगा को पहले न चीन्ह सके। किन्तु अपना परिचय देना आरम्भ करते ही, उस को चीन्ह गये, और उस से पूछा कि रामानंद गोस्वामी अब कहां हैं? जगा ने एक एक कर सब उन से कहा। किन्तु सत्यवती के उपदेशानुसार राम कृष्ण अधिकारी कह कर उस का परिचय दिया।

प्रेमानन्द राम कृष्ण अधिकारी को न चीन्ह सके। बहुत काल तक उसकी मुख की ओर देखते

रहे। किन्तु मन ही मन सोचने लगे, कि जब यह इतना कष्ट सहकर मेरा उद्धार करने को यहां आये हैं, तब अवश्य ही मेरे कोई आत्मीय कुटुम्ब होंगे।

सत्यवती एक टक स्वामी के मुख की ओर देखती रही, स्वामी के मुखावलोकन से इस दुरवस्था में भी कैसा अपार आनंद का सोत उस के हृदय में प्रवाहित होने लगा, वह वाक्यों से प्रकाश नहीं किया जा सक्ता। पति प्राणा साध्वीगण जब ही स्वामी का मुख अवलोकन करती हैं, तब ही उन का हृदय आनन्द से परिपूर्ण होता है।

सत्यवती ने आज बारह वर्षों पर स्वामी का मुखावलोकन किया है पहिले विश्वास था कि बारह वर्ष हुए स्वामी की मृत्यु हो गई है, किन्तु आज उसी मृत स्वामी को जीवित देखती है। आज उसका मन जिस आनन्द के हिल्लोल से उछल उठा है, उस के वर्णन करने में भाषा, वाक्य और कल्पना सब ही परास्त होंगे।

प्रेमानन्द ने कुछ काल पुरुष वेष धारिणी सत्यवती के मुख की ओर देख कर कहा—

"महाशय आप अवश्य हमारे कोई आत्मीय

कुटुंब होंगे। बारह वर्षों से मुझ से किसी आत्मीय स्वजन की देखा देखी नहीं हुई। इस लिये आप को नहीं चीन्ह सक्ता हूं।"

रामकृष्ण ने कहा "जी आप के देश से चले जाने से, आप की चाची सर्वदा ही आप के निमित्त बिलाप करती हैं उनके कष्ट दूर करने के निमित्त मैं रंगपुर और दिनाजपुर में आप का अनुसंधान करने लगा। हाल में पंडुवा के जंगल में आप के पिता और स्त्री से भेंट हुई। वहां कमला देवी नामक एक और स्त्री हैं। उन से सुना कि आप कलकत्ता के कारागार में बद्ध हुए हैं। तब आप को इससे मुक्त करने के लिये यहां आया। जिस कष्ट से आप को कारामुक्त किया है उसे तो जगा से सुन चुके हैं।

प्रेमानन्द। मेरी चाची से आप का कैसा सम्बन्ध है?

रामकृष्ण। जी वह मेरी सासु हैं।

प्रेमानन्द। मेरी चचेरी बहिन से क्या आपने विवाह किया है? मेरी कोई चचेरी बहिन है यह भी मैं नहीं जानता। मेरे एक चचेरे भाई थे,

बहुत दिन हुए उनकी भी मृत्यु हो गई।

रामकृष्ण। आप के तो जानने की कोई सम्भावना नहीं। आप के देश छोड़ जाने पर आप की चचेरी बहिन जन्मी है। उनकी अवस्था ग्यारह वर्ष से अधिक न होगी। यही गत वर्ष माघ मास में हमारा विवाह हुआ है।

प्रेमानन्द। आप सत्तरह अठारह वर्ष के युवक बोध होते हैं किन्तु आप का तो साहस बिलक्षण देखा जाता है। इस अल्प बयस में परोपकार के निमित्त आप ने इतना कष्ट स्वीकार किया है यह बड़े सुख का विषय है।

रामकृष्ण। जो अन्तर्यामी परमेश्वर जाने। मैं आप को कभी दूसरा नहीं समझता। उस समय देखा देखी नहीं हुई।

प्रेमानन्द। मेरे लिये आप ने अत्यन्त कष्ट स्वीकार किया है।

रामकृष्ण। जी मालदह में सब ही आप को परोपकारी मनुष्य कह कर प्रशंसा करते हैं। आप से परोपकारी सम्बन्धी के निमित्त किञ्चित कष्ट किया, इसमें और बेशी क्या।

जगा इनके परस्पर की वार्त्ता सुन कर अब हंसी रोक न सका। जगा को किञ्चित हंसते देख कर, सत्यवती ने उसे दूसरे स्थान में चले जाने के लिये इशारा किया। किन्तु प्रेमानन्द नहीं देख सके। जगा तब अन्य स्थान में चला गया।

प्रेमानन्द ने कहा "महाशय आप का मैं अत्यन्त बाधित हुआ। किन्तु हमको इसी मुहूर्त्त रंगपुर जाना पड़ेगा। आप शीघ्र ही मालदह जाकर मेरे पिता, कमलादेवी और चाची से मेरे कारागार से मुक्त होने का समाचार कहियेगा। रंगपुर का कार्य्योद्धार होने पर पंडुआ जाकर उनसे साक्षात करूंगा।

राम कृष्ण। आप की स्त्री से तो कुछ न कहना पड़ेगा। वह आप के विषय में प्रश्न करें तो क्या कहूंगा?

प्रेमानन्द। मेरे पिता से जो कुछ कहें वही उस से भी कहियेगा।

राम कृष्ण। आप की स्त्री आप को देखने के लिये अत्यन्त व्याकुल हुई हैं। एक बार उन से भेंट करने को न जाइयेगा?

प्रेमानन्द। अब एक मुहूर्त्त भी बिलम्ब नहीं कर सक्ता हूं। नहीं तो बृद्ध पिता और कमला देवी से क्या साक्षात् करने को न जाता।

रामकृष्ण। मेरे यहां आने के समय आपकी स्त्री ने बारम्बार मुझे आपको संग लेकर पंडुआ के जङ्गल में आने के लिये कह दिया है।

प्रेमानन्द। अब थोड़ा भी समय नहीं है। रंगपुर की क्या अवस्था हुई है मैं कुछ भी नहीं जानता। मेरी ही सम्मति से वे युद्ध के लिये तैयार हुए हैं। मुझे अब प्राण त्याग करके भी उनके मंगल की चेष्टा करना पड़ेगा।

रामकृष्ण। मालदह ही से तो रंगपुर जा सकते हैं। उससे एक दिन से अधिक आपको बिलम्ब नहीं होगा।

प्रेमानन्द। अब एक दिन बिलम्ब में भी तो सर्बनाश हो सकता है।

रामकृष्ण। मुझे क्षमा कीजियेगा। आप एक विज्ञ मनुष्य हैं। आपके निकट मैं बालक हूं किन्तु मुझे बोध होता है अपनी स्त्री पर आपका किञ्चित् भी अनुराग नहीं है। स्त्री पर अनुराग रहता तो क्या फिर उससे भेंट करने को न जाते?

प्रेमानन्द। कर्त्तव्य का उलङ्घन करके स्त्री से अनुराग प्रकाश करना क्या उचित है ? प्राणान्त होने पर भी मनुष्य को कर्त्तव्य का पथ उलङ्घन करना उचित नहीं है।

रामकृष्ण। जो स्त्री से भी तो एक कर्त्तव्य है।

प्रेमानन्द। है क्यों नहीं। स्त्री की रक्षा करना उसका भरण पोषन करना, सामर्थ के अनुसार उसे सुखी करने की चेष्ठा करना मैं सर्वदा ही अपना कर्त्तव्य समझता हूं प्राणान्त काल में भी उस कर्त्तव्य के प्रतिपालन न करने से मैं निवृत्त न होऊंगा उस समय ग्यारह वर्षों तक मैं विदेश में था, वह भी कर्त्तव्य ही के अनुरोध से। जिसने मेरे प्राण की रक्षा की थी, उसके उपकार की चेष्टा न करने से मुझे कृतघ्न होना पड़ता। सुतरां उसीके कार्य्य से मैं ग्यारह वर्ष तक विदेश में था विशेषत: तब स्वप्न में भी नहीं जानता था, कि मेरे पिता और स्त्री ऐसी दुर्दशा में पड़े होंगे। मेरे विदेश गमन काल में वह एक शिष्य के गृह में निवास करते थे।

रामकृष्ण। महाशय मैं बालक हूं मुझे क्षमा कीजिये। आपसे पहिले परिचय न रहने से भी

आप मेरे प्रधान कुटुम्ब हैं। इसी से बिना कपट के आपके संग वार्त्ता किया है। यदि स्त्री से आपका गाढ़ा प्रेम रहता तो उससे भेंट बिना किये कभी न जाते।

प्रेमानन्द। स्त्री से आसक्ति मनुष्य को कर्त्तव्य के पथ से भ्रष्ट करती है, मनुष्य को भोगासक्त करती है, मनुष्य को स्वार्थपर करती है, उससे आसक्ति न होना ही अच्छा है। स्त्री से मेरी वैसी आसक्तता नहीं है। मैं स्त्री के निमित्त वैसा प्रमत्त नहीं हूं।

रामकृष्ण। किन्तु जो स्त्री स्वामी के प्रत्येक कार्य्य में सहानुभूति प्रकाश करके, स्वामी को सर्वदा ही कर्त्तव्य के पथ में चलावे, उसपर गाढ़ी आसक्ति रहने से, बोध होता है कभी कर्त्तव्य साधन में बाधा नहीं पड़ सकती। किसी स्वार्थ परायणा रमणी पर प्रगाढ़ आसक्ति होने से मनुष्य क्रमशः कर्त्तव्य के पथ से भ्रष्ट हो सकता है।

प्रेमानन्द। सहृदय स्वामी के प्रत्येक कार्य्य में सहानुभूति प्रकाश कर सके, ऐसी स्त्री इस संसार में बहुत कम हैं। ऐसी सहधर्मिणी जिसके भाग्य में है, उसका प्रगाढ़ अनुराग और दम्पति स्नेह उसको कर्तव्य

के पथ से भ्रष्ट करना तो दूर रहा, पर उसको कर्तव्य के पथ में और भी चलाता है।

राम कृष्ण। तो आप के भाग्य में ऐसी स्त्री न मिलनेही के कारण, स्त्री से आपका अनुराग नहीं है।

प्रेमानन्द। अब ऐसे वार्त्तालाप करने के योग्य समय नहीं है। इन सब बातों को छोड़ दीजिये।

राम कृष्ण। अवश्य ऐसे वार्त्तालाप करने का यह योग्य समय नहीं है। किन्तु आप की स्त्री के अनुरोध से मैं पूर्णतः परित्याग नहीं कर सकता। उसने मुझे बारम्बार आपके मनकी अवस्था जानने को कहा था। आप की वार्त्ता के आभास से अब स्पष्ट ही जान पड़ा, कि स्त्री से आपका अनुराग नहीं है। आप समझते हैं कि वह आपके सब कार्य्यों में सहानुभूतिप्रकाश करने में असमर्थ है, इसी से आप उस पर अनुराग नहीं करते हैं।

प्रेमानन्द। मैं उस से अनुराग करता हूं किन्तु मेरे सम्पूर्ण कार्य्य में वह सहानुभति प्रकाश करने में असमर्था है। वह तो स्त्री ही है। हमारे देश के पुरुष भी हमारे कार्य्यमें कोई सहानुभूति प्रकाश नहीं करते उसे और क्या दोष दिया जाय?

रामकृष्ण। अब यदि आप की स्त्री आप के सब कार्य्यों में सहानुभूति प्रकाश करे, तो उस से अनुराग कीजियेगा ?

प्रेमानन्द। इन सब बातों को अब छोड़ दीजिये। मैं रंगपुर की चिन्ता से स्थिर नहीं हुआ हूं ये सब बातें अब अच्छी बोध नहीं होती।

रामकृष्ण। बारह तेरह वर्ष हुए आप ने अपनी स्त्री से नहीं कहा था, कि वह आपके सब कार्य्यों में सहानुभूति प्रकाश कर सके, तो वह आपकी एक मात्र आराध्य देवी होगी ?

प्रेमानन्द इस बार्त्ता को सुन कर राम कृष्ण अधिकारी के मुख की ओर एक टक देखते रहे। वह सोचने लगे, कि अपनी स्त्री से यह बात मालदह में रहने के समय अनेक बार कहा है किन्तु इस युवक ने इस बार्त्ता को किस प्रकार से जान लिया ?

रामकृष्ण ने कहा "महाशय आश्चर्य्य क्यों हुआ ? आपकी मृत्यु सुनकर जब आपकी स्त्री आपके निमित्त विलाप करती थीं, तब यह सब बातें उसके मुख से निकलती थीं।"

प्रेमानन्द ने समझा कि यह बात असम्भव नहीं

है। मेरी स्त्री ने मेरे शोक से विह्वल होकर, विलाप और परिताप करने के समय इन सब वार्त्ताओं को कहा होगा। किन्तु राम कृष्ण को सम्बोधन कर के कहा "महाशय मैंने बारम्बार आप से अनुरोध किया, कि इन सब वार्ताओं को अब छोड़ दीजिये। मैं रंगपुर की चिन्ता से स्थिर नहीं हूं। मैं अब आप से विदा चाहता हूं। आप ने जैसा मेरा उपकार किया है, उससे इस प्रकार आप से विदा होना कृतघ्नता का कार्य है। किन्तु कर्त्तव्य के अनुरोध से आज आप के सामने अकृतज्ञ होना पड़ा।"

रामकृष्ण ने यह वार्ता श्रवण कर, प्रेमानन्द का हाथ धर के कहा, "जी मुझे क्षमा कीजिये। इन बारह वर्षों के पश्चात्त आप के समान सम्बन्धी को पाकर अभी विदा नहीं कर सक्ता। यदि आप अभी रंगपुर जाना चाहते हैं, तो दो एक दिन आप के संग ही संग चलूंगा। आप के संग रंगपुर तक जाता किन्तु आप के पिता अत्यन्त बीमार हैं। मुझे शीघ्र ही पंडुआ में जाना पड़ेगा।

प्रेमानन्द सोचने लगे, यह तो बड़ी विपद आन पड़ी। इस के साथ रंगपुर की ओर जाने से,

पथ में केवल स्त्री के विषय को बार्त्ता करके मुझे चिढ़ित करेगा। तरुण अवस्था के युवक, केवल इस विषय में रसिकता करने से प्रेम करते हैं। विशेषत: सम्बन्ध से मैं इसका साला हूं, इस लिये केवल हास्य करता है। किन्तु प्रकाश में कहा कि "आप यदि पंडुआ में जाकर मेरे वृद्ध पिता के ऐसी दुरवस्था के समय में उनकी सेवा सुश्रूषा करेंगे, तो मेरा बड़ा उपकार होगा। आप अति अल्प बयस के युवक है। रंगपुर में अब युद्ध होगा। वहां आप का जाना उचित नहीं है।

रामकृष्ण। रंगपुर में युद्ध होगा उससे मेरा जाना उचित क्यों नहीं है? आप तो जाते हैं।

प्रेमानन्द। मैं इस समय प्राण विसर्जन करने में भी भय नहीं करता। आप अल्प बयस्क युवक हैं आप क्यों व्यर्थ वहां जाकर बिपद में पड़ियेगा?

रामकृष्ण। मैं भी आप के संग ही प्राण बिसर्जन करने को तैयार हूं। ऐसे सम्बन्धी के संग प्राण बिसर्जन करने में भय क्या है? मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में जाकर दोनों जन एकत्र बैठ कर बार्त्तालाप करेंगे।

प्रेमानन्द सोचने लगे यह बड़ा मूर्ख लड़का है। किन्तु इस को जैसे हो सके अभी बिदा करना चाहिये। यह सोच कर वह जगा को पुकारने लगे। इन्होंने समझा कि जगा को शीघ्र ही पंडुआ जाने को कहने से, यह मूर्ख बालक भी लाचार होकर जगा के संग ही संग पंडुआ चला जायगा।

किन्तु सत्यवती ने प्रेमानन्द के मन का भाव समझ कर कहा "आप अकेले ही यद मुझ से बिदा होना चाहते हैं, तो कान को निकट लाकर एक बात सुन कर चले जाइये। आप की स्त्री ने यह बात आप से कहने के लिये बारम्बार अनुरोध किया है।

यह कह कर प्रेमानन्द के कर्ण के निकट मुख ले जा कर धीरे धीरे दो एक बात के कहते ही, प्रेमानन्द चौंक कर रामकृष्ण के मुख की ओर ताकते रहे कुछ भी स्थिर न कर सके।

पुरुष वेश धारिणी सत्यवती ने तब हस्त से स्वामी का गला बल पूर्वक धर कर, रोते रोते कहा "हा नाथ पूर्व में अज्ञानता के वश कभी कभी आप के भले कामों में बाधा मैंने दी है। कभी कभी तुम्हारा

अनादर किया है। किन्तु विपद में पड़ कर समझी कि आप सत्य ही सत्य देवता हैं। अब से छाया की भांति आप का पदानुसरण करूंगी। आप के सम्पूर्ण अच्छे कामों में सहायता करूंगी। आपके सब कार्य्यों में सहानुभूति प्रकाश करूंगी। इस चिर अपराधिनी के पूर्व के अपराधों की क्षमा कीजिये।

स्त्री को इस अवस्था में देख कर प्रेमानन्द के चक्षु से अश्रु पात होने लगा। प्रायः आध घन्टा पर्यन्त सत्यवती स्वामी का गला धरे खड़ी रही। दोनों ही निर्वाक किसी के मुख से कोई बात नहीं निकलती।

कुछ काल के पश्चात जगा के इनके निकट आने से, प्रेमानन्द ने सत्यवती से कहा "तुम्हें पंडुआ के जंगल में पहुंचा कर मुझे रंगपुर जाना पड़ेगा। किन्तु पैदल गमन करना पड़ेगा। मुझे भय होता है कि तुम उतना शीघ्र चल सकोगी कि नहीं?

सत्यवती ने कहा "नाथ! उस विषय में आपकी चिन्ता नहीं करना चाहिये। विपद ने शरीर को भली भांति बलिष्ठ कर दिया है। मैं तीन दिन

तीन रात्रि में यहां आई हूं। पंडुआ के जंगल से रंगपुर को जाने में आप को विलम्ब नहीं होगा। रंगपुर के मनुष्य आप के लिये पंडुआ के जंगल में अश्व बांध गये हैं। अवश्य ही संपूर्ण पथ चलने में जितना समय लगेगा, उससे थोड़े ही समय में पंडुआ से रंगपुर जा सकेंगे । आप के पिता की जैसी अवस्था है इससे अब और अधिक दिन न बच सकेंगे। उनसे इस समय भेंट न कर जाने से, बोध होता है कि फिर आप लोग पिता पुत्र की भेंट न होगी।

इसके पश्चात प्रेमानन्द अपने संगी चौदह मनुष्यों को और सत्यवती और जगा को संग लेकर, मालदह की ओर चले। ये लोग दो दिन दो रात्रि में पंडुआ के जंगल में आ उपस्थित हुए।

———

पंचविंश अध्याय।

अन्तिम काल की चिन्ता।

सत्यवती के कलकत्ता चले जाने के पश्चात् कमलादेवी और रूपा जी जान से वृद्ध रामानन्द गोस्वामी की सेवा सुश्रूषा करने लगे। किन्तु रामानन्द की परमायु समाप्त ही हो आई है। देवी सिंह के बरकंदाज़ोंके प्रहार से उसी दिन उनका प्राण वियोग होता। केवल चिर स्वस्थ शरीर के कारण वह आज तक जीवित हैं।

रामानन्द केवल आशा पथ देख रहे हैं प्रत्येक मुहूर्त्त कमलादेवी और रूपा से प्रश्न करते हैं "पुत्री मेरे पुत्र को लेकर आई है" कुटी के निकट किसी वृक्ष से पत्र गिरते ही पद संचार का शब्द समझ कर तुरंत ही रूपा को बाहर जाकर कौन आया है देखने को कहते। रूपा बाहर से फिर आकर जब कहता "कोई नहीं है," तब दीर्घ निश्वास परित्याग करके कहते " जानता हूं मेरी प्रेमानन्द से भेंट न होगी।

कमलादेवी समझा कर कहतीं "आप को भय नहीं, निश्चय ही आप से उनकी भेंट होगी।"

* * * * *

आज माघ का २४ वां दिन है। चौबीस दिन हुए रामनन्द देवी सिंह के बरकन्दाजों से पकड़े जाकर पीटे गए हैं कल से उनके जीवन की आशा पूर्णतः शेष हो गई है। कृपा कल पैदल रामानन्द के ग्राम में जाकर उनके कईएक आत्मीय ब्राह्मणों को संग में ले आया है। इनमें से कोई कोई रामानन्द गोस्वामी को ऐसी अवस्था में उनके पैतृक बास स्थान में ले जानेका प्रस्ताव करते हैं। किन्तु उस प्रस्ताव में कमला देवी की सम्मति नहीं है।

इस समय भी रामानन्द को भली भांति ज्ञान है। वह सम्मुखस्थ सब को सम्बोधन कर कहते हैं—

"मेरे मृत्यु के पूर्व पुत्री और प्रेमानन्द न आ पहुंचे तो उनको शतचेष्टा करके मेरे ऋण के चुका देने को कहियेगा। मेरी मृत्यु होने पर मेरी श्राद्ध के पूर्व ही ऋण चुक जाना चाहिये। ऋणावस्था में किसी को भी श्राद्ध करने से कोई फल नहीं होता है। और मेरी भिक्षा की झोली में एक टुकड़ा कागज़ का है। उस कागज़ में जो सब बातें लिखी हैं, वही मेरे समाधिस्तम्भ में लिखना पड़ेगा।

रामानन्द की सकल वार्ता समाप्त होते न होते कुटी के निकट अनेक मनुष्यों के पद संचार का शब्द सुनाई दिया। रूपा ने बाहर जाकर देखा, सत्यवती, प्रेमानंद, जगा और अन्यान्य तेरह चौदह मनुष्य कुटी की ओर आते हैं। उस ने तब दौड़ कर कुटी में प्रवेश करके कहा "प्रेमानंद ठाकुर आये हैं।"

रामानंद इस बात को सुन कर आनंद से पुलकित हुए अकस्मात हर्ष के कारण किञ्चित् उत्तेजित हो पड़े। उन के उठने की शक्ति पूर्णत: क्षीण हो गई थी। किन्तु तिस पर भी अब उठ कर बैठने की चेष्टा करने लगे। रूपा ने उन के मन के भाव को समझ कर उन को गोद में लेकर उठाया, गृह में प्रेमानंद और सत्यवती के प्रवेश करते ही रामानंद गोस्वामी ने हाथ पसार कर उन को गोद में लेने की चेष्टा किया। किन्तु हस्त उठाना भी दुःसाध्य है। प्रेमानंद इन के चरण में प्रणाम कर उन के दोनों चरणों को गोद में लेकर बैठे। सत्यवती दूसरी ओर जाकर उन के पृष्ठ पर हाथ फेरने लगी।

इस समय गृह स्थित सब ही कुछ काल के लिये निर्वाक् थे। कोई भी नहीं बोलता था पिता पुत्र